ISBN- 978-93-91442-08-8 RNI No. : RAJHIN27861/2021

काव्य संगम

संपादक

विजय कुमार शर्मा

काव्य संगम
नवसंवत्सर

ISBN- 978-93-91442-08-8
RNI No. : RAJHIN27861/2021

संपादक
विजय कुमार शर्मा

©संस्कार न्यूज

प्रथम प्रकाशन 2023

मूल्य-रूपये 289 मात्र

प्रकाशक
डी डी भारती पब्लिकेशन
177/10, मातृछाया,
सिंधी तोपदड़ा,अजमेर-305001
फोन-9610012000
Mail: info@sanskaarnews.in

विक्रम संवत
2080 की
हार्दिक
शुभकामनाएं

हमारे आजीवन संरक्षक

रवि घायल, अबोहर

ज्ञानेश्वरी व्यास, भोपाल

जि. विजय कुमार, हैदराबाद

गणपतलाल उदय

कुमार आशुतोष

पी यादव ओज,झारसुगड़ा

डॉ. लाल थदानी

श्रीमती इंदु आचार्य

शिशिर देसाई, सनावद

आपका फोटो और नाम भी इस पेज पर अगले प्रत्येक संकलन में आ सकता है। अधिक जानकारी के लिए 9610012000 पर कॉल करें।

नवसंवत्सर

नववर्ष के दिन प्रत्येक इंसान चाहे कहीं भी हो अपने आपको को उत्साहित, प्रफुल्लित व नई उर्जा से ओतप्रोत महसूस करता है। अधिकतर देशवासी 1 जनवरी को ही नववर्ष की शुरुआत मानते हैं लेकिन अपनी संस्कृति व इतिहास के प्रति हमारी उदासीनता के चलते यह सत्य नहीं है। 1 जनवरी से शुरू होने वाला कैलेंडर तो ग्रिगोरियन कैलेंडर है। इसकी शुरूआत 15 अक्टूबर 1582 को इसाई समुदाय ने क्रिसमस की तारीख निश्चित करने के लिए की थी क्योंकि इससे पहले 10 महीनों वाले रूस के जूलियन कैलेंडर में बहुत सी कमियां होने के कारण हर साल क्रिसमस की तारीख निश्चित नहीं होती थी। इस उलझन को सुलझाने के लिए 1 जनवरी को ही इन लोगों ने नववर्ष मनाना शुरू कर दिया।

क्या हम भारतीयों ने भी यह सोचा की हमारा नववर्ष कबसे शुरू होता है? हमारा अपना क्या इतिहास है? ठीक है किसी को भी कोई भी उत्सव जब मर्जी मनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए यह उसका अपना निजी अधिकार है लेकिन क्या हम अपनी संस्कृति व अपने संस्कारों की तिलांजलि दे कर उत्सव मनाएं? आज जिस भारतीय संस्कृति का अनुसरण विदेशी लोगों ने करना शुरू किया है उसी भारतीय संस्कृति व सभ्यता को हम तहस–नहस करने पर तुले हैं।

भारतीय कैलेंडर के अनुसार नववर्ष का आगाज 1 जनवरी से नहीं बल्कि चौत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से नवसंवत्सर आरंभ होता है जो अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार अक्सर मार्च–अप्रैल माह में आता है। हिंदू नववर्ष यानी संवत 2079 इस वर्ष 2 अप्रैल यानी शनिवार से शुरू होने जा रहा है। शास्त्रों में कुल 60 संवत्सर बताए गए हैं। मान्यता है कि नए वर्ष के प्रथम दिन के स्वामी को उस वर्ष का स्वामी मानते हैं। 2 अप्रैल को शनिवार का दिन है इसलिए इस वर्ष के देवता शनि महाराज हैं।

इसके साथ ही नवसंवत्सर का निवास कुम्हार का घर व समय का वाहन अश्व होगा। भारतीय हिंदू कैलेंडर की गणना सूर्य और चंद्रमा

के अनुसार होती है। दुनिया के तमाम कैलेंडर किसी न किसी रूप में भारतीय हिंदू कैलेंडर का ही अनुसरण करते हैं। भारतीय पंचांग और काल निर्धारण का आधार विक्रम संवत ही हैं। जिसकी शुरुआत मध्य प्रदेश की उज्जैन नगरी से हुई। यह हिंदू कैलेन्डर राजा विक्रमादित्य के शासन काल में जारी हुआ था तभी इसे विक्रम संवत के नाम से भी जाना जाता है। विक्रमादित्य की जीत के बाद जब उनका राज्यारोहण हुआ तब उन्होंने अपनी प्रजा के तमाम ऋणों को माफ करने की घोषणा करने के साथ ही भारतीय कैलेंडर को जारी किया इसे विक्रम संवत नाम दिया गया।

हिंदू नववर्ष चौत्र नवरात्रि यूनानियों ने नकल कर भारत के इस हिंदू कैलेंडर को दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में फैलाया। – फोटो रू पेजवबा विक्रम संवत आज तक भारतीय पंचाग और काल निर्धारण का आधार बना हुआ हैं। सबसे बड़ी विशेषता इस कैलेंडर की यह है कि यह वैज्ञानिक रूप से काल गणना के आधार पर बना हुआ है। सभी 12 महीने राशियों के नाम पर हैं, इसका समय 365 दिन का होता है। बात करें चन्द्र वर्ष की तो इसके महीने चौत्र से प्रारम्भ होते हैं। इसकी समयावधि 354 दिनों की होती है शेष बढ़े हुए 10 दिन अधिमास के रूप में माने जाते हैं। ज्योतिष काल की गणना के अनुसार इसके 27 प्रकार के नक्षत्रों का वर्णन है। एक नक्षत्र महीने में दिनों की संख्या भी 27 ही मानी गई है। सावन वर्ष में दिनों की संख्या लगभग 360 होती है और मास के दिन 30 होते हैं वैसे तो अधिमास के 10 दिन चन्द्रवर्ष का भाग है लेकिन इसे चंद्रमास न कह कर अधिमास कह दिया जाता है।यही नहीं यूनानियों ने नकल कर भारत के इस हिंदू कैलेंडर को दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में फैलाया। भले ही आज दुनिया भर में अंग्रेजी कैलेंडर का प्रचलन बहुत अधिक हो गया हो लेकिन फिर भी भारतीय कलैंडर की महत्ता कम नहीं हुई। आज भी हम अपने व्रत–त्यौहार, महापुरुषों की जयंती–पुण्यतिथि, विवाह व अन्य सभी शुभ कार्यों को करने के मुहूर्त आदि भारतीय कलैंडर के अनुसार ही देखते हैं। चौत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही वासंती नवरात्र भी प्रारंभ होते हैं। सबसे खास बात इसी दिन ही सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की

थी। ताज्जुब होता है जिस भारतीय कैलेंडर ने दुनिया भर के कैलेंडर को वैज्ञानिक राह दिखाई आज हम उसे ही भूलने लग गए हैं।

हिंदू नववर्ष क्या है–दुनिया के सभी समुदायों के द्वारा अपने स्थानीय रीति–रिवाजो एवं परम्पराओं पर आधारित नववर्ष मनाया जाता है। नववर्ष सभी समुदायों के लिए नवीनता का प्रतीक होता है एवं नए वर्ष के अवसर पर सभी लोग नवीन संकल्प लेते है। दुनिया के विभिन भागों में अलग–अलग प्रकार से नववर्ष मनाया जाता है ऐसे में सभी समुदाय अलग–अलग तिथि एवं माह में अपना नववर्ष मनाते है। ईसाई धर्म के लोग ग्रिगोरियन कैलेंडर के आधार पर 1 जनवरी को अपना नववर्ष मनाते है। इसी प्रकार चीन के लोग लूनर कैलेंडर के आध ाार पर, इस्लाम के अनुयायी हिजरी सम्वंत के आधार पर, पारसी नववर्ष नवरोज से, पंजाब में नया साल वैशाखी पर्व से, जैन नववर्ष दीपावली के अगले दिन से मनाया जाता है।

भारत में सदियों से हिन्दू समुदाय द्वारा विक्रम संवत पर आध ाारित कैलेंडर के अनुसार चौत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। विक्रम संवत पर आधारित कैलेंडर के अनुसार मनाया जाने वाले हिन्दू नववर्ष को हिंदू नव संवत्सर या नया संवत के नाम से भी जाना जाता है। साथ ही इस दिवस को संवत्सरारंभ, युगादी, गुडीपडवा, वसंत ऋतु आरम्भ आदि नामो से भी जाना जाता रहा है। हिन्दू नववर्ष से ही देश में नवीन वर्ष की शुरुआत मानी जाती है जो की चौत्र महीने में होता है।

पश्चिमी नव वर्ष–नव वर्ष उत्सव ४,००० वर्ष पहले से बेबीलोन में मनाया जाता था। लेकिन उस समय नए वर्ष का ये त्यौहार 21 मार्च को मनाया जाता था जो कि वसंत के आगमन की तिथि भी मानी जाती थी। प्राचीन रोम में भी नव वर्षोत्सव के लिए चुनी गई थी। रोम के शासक जूलियस सीजर ने ईसा पूर्व ४५वें वर्ष में जब जूलियन कैलेंडर की स्थापना की, उस समय विश्व में पहली बार १ जनवरी को नए वर्ष का उत्सव मनाया गया। ऐसा करने के लिए जूलियस सीजर को पिछला वर्ष, यानि, ईसापूर्व ४६ इस्वी को ४४५ दिनों का करना पड़ा था। ख्2,

सनातन (हिन्दू) नववर्ष– महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा के दिन छत पर गुड़ी लगाने की परम्परा है

हिन्दुओं का नव वर्ष चौत्र नव रात्रि के प्रथम दिन अर्थात् वर्ष प्रतिपदा एवं गुड़ी पड़वा पर प्रत्येक वर्ष विक्रम संवत के अनुसार चौत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होता है।

भारतीय नव वर्ष–भारत के विभिन्न भागों में नव वर्ष दो–तीन प्रमुख तिथियों को मनाया जाता है। प्रायः पहली दो तिथियाँ मार्च और अप्रैल के महीने में पड़ती है।

पहली तिथि कृ मेष संक्रान्ति अथवा वैशाख संक्रान्ति (बैसाखी) अथवा विषुवधविषुवत संक्रान्ति (बिखौती) अथवा सौरमण युगादि भी कहते हैं। इस तिथि को मुख्य रूप से सौरमण वर्षपद मानने वाले प्रान्त नये वर्ष के रूप से मनाते हैं, जैसे रू तमिळ–नाडु और केरल। इसके अतिरिक्त बंगाल और नेपाल भी इसे नव वर्ष के रूप में मनाते है। हिमालयी प्रान्तों जैसेरू उत्तराखण्ड, हिमाचल और जम्मू के साथ साथ पंजाब, पूर्वांचल और बिहार में केवल एक पर्व के रूप मनाया जाता है पर नव वर्ष के रूप में नहीं। उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू, पंजाब, पूर्वांचल और बिहार में नव सम्वतसर वर्ष प्रतिपदा के दिन आरम्भ होता है। सिखों के द्वारा नवनिर्मित नानकशाही कैलंडर के अनुसार सिख नव वर्ष चौत्र संक्रांति को मनाया जाता है।

दूसरी तिथि रू वर्ष प्रतिपदा (चौत्र शुक्ल प्रतिपदा) अथवा चन्द्रमण युगादि। इस तिथि को मुख्य रूप से चन्द्रमण वर्षपद मानने वाले प्रान्त नये वर्ष के रूप से मनाते हैं। कर्णाटक एवं तेलुगू राज्य– तेलंगाना और आन्ध्र प्रदेश में इसे उगादी (युगादि=युग़आदि का अपभ्रंश) के रूप में मनाते हैं। यह चौत्र महीने का पहला दिन होता है। कश्मीरी नववर्ष भी इसी दिन होता है और उसे नवरेह के नाम से जाना जाता है। महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा के रूप में यही दिन मनाया जाता है। और सिन्धी इसी दिन को चेटी चंड कहते हैं। सिंधी उत्सव चेटी चंड, उगाड़ी और गुड़ी पड़वा एक ही दिन मनाया जाता है। मदुरै में चित्रैय महीने में चित्रैय तिरूविजा नए बरस के रूप में मनाया जाता है।

तीसरी तिथि रू बलि प्रतिपदा (कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा)। यह दीपावली के अगले दिन मनाया जाता है। दीपावली पर सब हिन्दू महालक्ष्मी पूजा कर एक वर्ष के लेखे जोखे को बंद कर देते हैं। अगले

दिन से नये आर्थिकध्वाणिज्यिक वर्ष का आरम्भ होता है। व्यापारी वर्ग प्रधान प्रान्तों यह दिन मुख्य रूप से नव वर्ष के रूप में मनाते हैं । मारवाड़ी नया बरस दीपावली के अगले दिन होता है। गुजराती नया बरस भी दीपावली के अगले दिन होता है। इस दिन जैन धर्म का नववर्ष भी होता है।,

चौत्र शुक्ल प्रतिपदा का ऐतिहासिक महत्व

इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की।

सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन राज्य स्थापित किया। इन्हीं के नाम पर विक्रमी संवत् का पहला दिन प्रारंभ होता है।

प्रभु श्री राम के राज्याभिषेक का दिन यही है।

शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात् नवरात्र का पहला दिन यही है।

सिखो के द्वितीय गुरू श्री अंगद देव जी का जन्म दिवस है।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की एवं कृणवंतो विश्वमआर्यम का संदेश दिया।

सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरूणावतार झूलेलाल इसी दिन प्रगट हुए।

राजा विक्रमादित्य की भांति शालिवाहन ने हूणों और शकों को परास्त कर भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना। शक संवत की स्थापना की।

युधिष्ठिर का राज्यभिषेक भी इसी दिन हुआ।

संघ संस्थापक प.पू.डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म दिन।

महर्षि गौतम जयंती।

भारतीय नववर्ष का प्राकृतिक महत्व

वसंत ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है।

फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ

करने के लिये यह शुभ मुहूर्त होता है।

भारतीय नववर्ष कैसे मनाएँ

हम परस्पर एक दुसरे को नववर्ष की शुभकामनाएँ दें। पत्रक बांटें , झंडे, बैनर....आदि लगावे ।

आपने परिचित मित्रों, रिश्तेदारों को नववर्ष के शुभ संदेश भेजें।

इस मांगलिक अवसर पर अपने–अपने घरों पर भगवा पताका फेहराएँ।

आपने घरों के द्वार, आम के पत्तों की वंदनवार से सजाएँ।

घरों एवं धार्मिक स्थलों की सफाई कर रंगोली तथा फूलों से सजाएँ।

इस अवसर पर होने वाले धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लें अथवा कार्यक्रमों का आयोजन करें।

प्रतिष्ठानों की सज्जा एवं प्रतियोगिता करें। झंडी और फरियों से सज्जा करें।

इस दिन के महत्वपूर्ण देवताओं, महापुरुषों से सम्बंधित प्रश्न मंच के आयोजन करें।

वाहन रैली, कलश यात्रा, विशाल शोभा

यात्राएं कवि सम्मेलन, भजन संध्या , महाआरती आदि का आयोजन करें।

चिकित्सालय, गौशाला में सेवा, रक्तदान जैसे कार्यक्रम।

–विजय कुमार शर्मा
संपादक

इस संकलन के रचनाकार

डॉ लाल थदानी
डॉ.राखी (गुड़िया)
डा. राजीव कुमार दास
अनिता राठौड़ ‘अnu’
फोरम.आर. महेता
सरोज महेन्द्र पाण्डेय
सुधा पण्डा
संजय कुमार
जगदीश प्रसाद
सेवक राम निषाद
सुनीता नाहटा
रीझवाणी गोविन्द ‘आनंद’
दीपक खरे
प्रदीप छाजेड़
शशांक मिश्र भारती
डॉ उषा जलकिरण
संदीप खैरा ‘दीप’
डॉ.अमित मालवीय ‘हर्ष’
प्रमोद कुमार ‘सत्यधृत’
अंजू श्रीवास्तव
चंद्रकला भरतिया
पूर्णिमा मंडल
ज्ञानेश्वरी व्यास (स्मृति)
डॉ अनुराधा प्रियदर्शिनी
दिनेश कुमार नेताम

वंदना झा
मुकेश कुमार दुबे
सुषमा सिंह 6उर्मि’
हार्दिका विजयभई गढ़वी
हरीश कुमार सिंह भदौरिया
जया बच्चन शर्मा प्रियवंदा
माया एस एच
सुनीता अग्रवाल
बलराम यादव
ईश्वर साहू (आसरा)
सुरेश कुमार चन्द्रा
डॉ.राखी (गुड़िया)
हर्षिता जॉर्ज
चन्द्र प्रकाश
राजेश तिवारी ‘मक्खन’
डॉ.सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
वीरे सागर महासर
जीवन चन्द्राकर ‘लाल’
आनन्दकृष्णन एड़चेरी
निधि बोथरा जैन
नीता सिंह
किशोरी लाल जैन बादल
लता सेन
सचिन लोधी
नंदिनी तोमर

रेखा हिसार
गोल्डी अधिकारी
दिप्ती भारद्वाज 'चेतना'
सपना सी.पी. साहू 'स्वप्निल'
राजपाल
नीता सिंह
भूमिका शर्मा
नीना महाजन नीर
सपना
उषा श्रीवास वत्स
शिशिर देसाई
मालिनी त्रिवेदी पाठक
पंडित राकेश मालवीय मुस्कान
अनीता अरोड़ा
नीरज यादव(
ओजस मित्तल
डॉ मानवेन्द्र सिंह 'मनि'
डॉ सत्यवानी मुक्कू

नंदिता माजी शर्मा
पुष्पा त्रिपाठी 'पुष्प'
उर्मिल शर्मा
हीरा सिंह कौशल
डॉ पूनम जायसवाल,
सतीश जायसवाल
मंजु रत्न भार्गव
संतोष श्रीवास्तव 'सम'
श्याम कुमार कोलारे
शिल्पी जैन
रूपा कुमारी कर्ण
दुर्गेश्वर राय
सुनील कुमार रोहतास
डॉ सरला सिंह 'स्निग्धा'
सरिता सिंह
बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता
महेन्द्र सिंह कटारिया
प्रो/डा दक्षा एच निमावत
सुनीता बंसल

नव संवत्सर

नव संवत्सर हिंदू वर्ष का
धूमधाम से स्वागत करें
चौत्र शुक्ल प्रतिपदा उत्कर्ष का
नए परिधान में स्वागत करें ।
दु:ख सुख, धूप छांव करे न विचलित
नवरात्रा स्थापना दिवस के हर्ष का
स्तूति ध्यान में स्वागत करें ।
नई उमंग से जीत के अंतिम निष्कर्ष का
सामुहिक गान में स्वागत करें ।
नया सवेरा नर्ध्इ आशाओं का हो संचार
श्रृंगारित प्रकृति सुगन्धित पवन ओश नक्षत्र का
जीवन उद्यान में स्वागत करें ।
सर्वधर्म समभाव के बहती रसधार सहर्ष का
दीप दान में स्वागत करें ।
किसान सैनिकों के खून से अखंड भारतवर्ष का
मिलकर सम्मान में स्वागत करें ।

डॉ लाल थदानी

नवसंवत्सर की नूतन बेला में

नव दीप जले नव फूल खिले,
भूल चलें सब शिकवे गिले द्य
नवसंवत्सर की नूतन बेला में,
आओ हँसकर सबसे मिलें द्यद्य

क्या खोया और क्या पाया ,
कौन अपना कौन पराया द्य
कौन हारा कौन जीत गया,
साल पुराना बीत गया द्य
चलो फिर से कदम बढ़ाएं,
नया है कारवाँ नई मंजिलें द्य
नवसंवत्सर की नूतन बेला में,
आओ हँसकर सबसे मिलें द्यद्य

सुख – दुःख की कई बातें हुई,
ना जाने कितनों से मुलाकातें हुई,
दर्द से दिल रोया भी,
कुछ पाया तो कुछ खोया भी द्य
जिंदगी के ये पल ना गवाएं,
चलते रहेंगे ये सिलसिले,
नवसंवत्सर की नूतन बेला में,
आओ हँसकर सबसे मिलें द्यद्य

डॉ.राखी (गुड़िया)

नवसंवत्सर तुम्हारा स्वागत है"

तुम धूप लेकर निकलो,मैं चाँद लेकर चलूँगा ।
नए साल से उम्मीदें एक दूजे से लेकर चलूँगा ।।

मजबूर हो जाय लोग,हसीन मौसम बनाने को।
घर–घर होली दिवाली संग ईदें लेकर चलूँगा ।।

बेखधैफ पड़ोसी कौम,दरवाजा खोल सोया करे।
सुकून की जिंदगी चौन की नींदें लेकर चलूँगा ।।

धड़कन–धड़कन पूछा करे,हाल प्यारे भारत की।
मिटा देने की कसम आतंकी दरिंदे लेकर चलूँगा ।।

बेबसी से न छूटा करे,जिसकी हर तमन्नाएँ कभी।
सपने सबके पूरे हो हर आँसू के बूँदे लेकर चलूँगा ।।

कध्ुदरत की कध्दर करें सब,कायनात की वादियों में
गुलजार कर दे फिजाएँ,रंगीन नजारे लेकर चलूँगा ।।

सींचे हैं जो बड़े जतन से,अहले वतन हिन्दुस्तान की।
कध्ुर्बानी सीने में रख कुछ फूल चुनिंदे लेकर चलूँगा ।।

जाति मजहब भूल जाओ,दिल मिले दिलदार गली।
शहर–शहर से गाँव–गांव ऐसी नुमाइंदें लेकर चलूँगा।।

आधी आबादी की न बर्बादी,ये दुनिया की शहजादी ।
कोख की पलती नन्हीं चिड़िया परिंदे लेकर चलूँगा ।।

डा. राजीव कुमार दास

नवसंवत की शुभ बेला

आओ करें हम सब मिलकर,
नवसंवत का दिल से स्वागत,
भूल जाएं बीते दिन के गम,
भर लें मन में खुशी की चाहत।

आओ मिलकर यह प्रण करें,
ना करें कभी किसी को आहत,
सब मिल जुल कर बाटें खुशियां,
नव वर्ष में मिले सबको राहत।

दीन दुखियों की सेवा करें हम,
करें मिलकर सबकी हिफाजत।
ब्रह्मा जी की सुंदर रचना का,
दिल खोलकर करें आवभगत।

राम जी का हुआ आज राजतिलक,
ब्रह्मा जी ने आज ही रचा ये जगत।
आओ करें हम सब मिलकर,
नवसंवत का दिल से स्वागत।

श्रीमती अनिता राठौड़ 'anu'

नवरंग

जिंदगी में भरने मनरंगी नवरंग, झिलमिलाती आशाओं के संग।

संसार में नई उम्मीद उमंग ,
नई किरणें संचार दिल में तरंग।

चौत्र शुक्ल प्रतिपदा हिंदू नव वर्ष आता ,
विक्रम संवत की शुभकामना हर हिंदू दे जाता।

सुंदर युग के नवनिर्माण के प्रयास,
स्वस्थ रहे हर मनुष्य के संघर्ष में श्वास।

हर मनुष्य प्राप्त करें नव राह, नवल वर्ष लाएं सबके दिल हर्ष प्रवाह।

जीवन में गाए सब नवोदित गीत, उत्कर्ष आनंद संग हो सबकी प्रीत।

अनसुलझी हर समस्या हो सरल, सुनहरे पल की जिंदगी में हो पहल।

कठिन समय की ना हो हलचल, सुख के आयाम प्राप्त करें जीवन हो सफल।

फोरम.आर. महेता

चौत्र प्रतिपदा

चौत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा,
शुभ हिन्दू नववर्ष है आया ,
नवरात्रि के शुभ शुभारंभ संग
खुशियों का माहौल है छाया.. स
ग्रंथ कहें,ब्रम्हा जी ने इस दिन,
सृष्टि रचना था,आरम्भ किया ,
राजा विक्रमादित्य ने इस दिन,
विक्रम संवत शुरूआत किया स
जन्मे गुरु झूलेलाल इसी दिन,
नव रूप धरे,नवदुर्गा हैं आतीं ,
सुख,समृद्धि ,खुशियों संग जन ,
गुड़ी पड़वा मनातेऔर उगादी स
हरी प्रकृति है, पल्लवित,सुरभित..
मानो सृष्टि भी नववर्ष मनाती ,
देवी मां के पूजन,आराधन को ज्यों,
प्रकृति भी सज, संवर है जाती स
दिव्य स्वरूप पधारी नौ दुर्गा,
सबको सुख,शान्ति, समृद्धि,प्रदान करेंगी,
दुष्टों का संहार कर अम्बे मां,
सबको ,अपने आशीष प्रदान करेंगी...
अखिल विश्व को मां जगदम्बे
अपने आशीष प्रदान करेंगी.. स

श्रीमति सरोज महेन्द्र पाण्डेय

नवसंवत्सर

देखो नव दीप जले,
आओ नव पथ चलें,
नित नव फूल खिले,
आया नव वर्ष है।

पावन चौत्र का मास,
सबके लिए है खास,
मन धरे सभी आस,
सभी मन हर्ष है।।

आया वर्ष है नवल,
करें स्वागत मचल,
लाया खुशियाँ धवल,
जीवन उत्कर्ष है।

सुखमय हो संसार,
करो ईश्वर आभार,
है उसका उपकार
नूतन आकर्ष है।।

सुधा पण्डा

हिन्दू नववर्ष

जब प्रकृति ने ली हो अंगड़ाई
सुरभित हो जब रुत मुस्काई,
स्वागत करें सहर्ष मिलकर हम
चौत्र मास में हिन्दू नववर्ष आयी।

खिल रहे हैं उपवन चहुँओर
गुनगुना रहे भंवरे करके शोर,
आम्रमंजरी महक रही हवाओं में
हृदयांगन में नाच रहे हैं मोर।

माँ दुर्गा की पूजा अर्चना
करते हैं भक्त आराधना,
चौत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से
होती नवमी तक माँ की उपासना।

भक्ति भाव में डूबा रहेगा मन
आओ करें माता रानी की वंदना,
राम जी के अवतरण की भी खुशी
प्रकट करें रामनवमी का त्योहार मना।

मन में नव तरंग हो
हृदय में नव उमंग हो,
खुशियां मनाएं हम करें सहर्ष वंदन
आओ करें नववर्ष का अभिनन्दन।।

संजय कुमार

नव संवत्सर

नव वर्ष , संस्कृति ,ज्ञान।
वेद पुराण श्री गीता ,जांच।
सृष्टि रचना, ब्रह्मा हाथ ।
पक्ष शुक्ल,अंक चौत्र मास।

बदलें प्रकृति अद्भुत भाव।
कोयल कू के वृक्ष लहराए।
अग्नि ताप लगे पूर्ण विराम।
कृषि खेती धन मुख मुस्कान।

मां तुलसी पूजा सुबह शाम।
कछुआ मूर्त प्रेमी बुध अनुराग।
हाथी चांदी ,चित्र प्रेमी आंखे नाज।
मोर पंख आनंदित शंखनाद।

विक्रम संवत महत्व खास।
हिंद संस्कृति सत्य आचार।
मां लक्ष्मी ,दे शुभ आशीर्वाद।
नव वर्ष संवत दिन बुधवार ।

ईस्वी सन के देखे परिणाम।
आई लव यू ,हैप्पी ,बदली चाल।
नव पीढ़ी सत्य सावधान।
हिंद संस्कृति शुद्ध संवत प्रमाण।

जगदीश प्रसाद

नव संवत्सर

गाते कोयल गीत–गजल,
खग करते मंगलाचरण।
नव प्रीत,नव सृजन लिए,
नव संवत्सर हो पदार्पण।।

खिले–खिले हो बाग–बगीचे,
खिली–खिली हो फुलवारी।
नव संवत्सर की मधुरिम बेला,
धवल चाँदनी–सी हो प्यारी।

भौंरे गुंजन करें पुष्पों पर,
चहुँ ओर सरसों लहराई।
मंद–मंद बहती मलय पवन,
नया सबेरा लेकर आई।।

जीवन में आए खुशहाली,
स्वागत करें नव संवत्सर के।
नव शृंगार मिला तरूओं को,
रंग बासंती हो सुअवसर के।।

नव संवत्सर में नई पहल हो,
न रहे कोई जात–पात का बंधन।
अन्तर्मन में सदभाव उपजाकर,
सद्ज्ञान–मानवता का हो जतन।।

सेवक राम निषाद

नव वर्ष की नव बेला में,

मिलकर नव संकल्प सजाएं
नई उम्मीदें नए हो सपने,
नए–नए परचम लहराए

नव वर्ष में कुछ ऐसा हो,
अंतर का कलमष धुल जाए।
वैर–भाव की गांठ अगर हो,
प्रेम प्यार से वो खुल जाए।।

प्यार बसे हर दिल के अंदर,
शांति,अमन के फूल खिलाए।
कदम से कदम मिलाकर हम सब,
इक दूजे का साथ निभाए।।

भारत मां की आन बान पर,
अपना हम सर्वस्व लुटाएं।
परहित में अपना हित समझे,
मन को इतना सरल बनाएं।।

सुनीता नाहटा

आया नवसंवत्सर

आया.. आया.. नया नवसंवत्सर ,
आओ मनाएं , हम सब मिलकर ।

सारे भेद भाव , आज भूल जाएं ,
एक दूजे को आज , गले से लगाएं ।
प्यार हमारा , बढ़ता रहे उतरोतर ,
आया.. आया.. नया नवसंवत्सर ।

हम हैं हिंदू , ये है हमारा नया साल ,
करते हैं दुवाएं , रहे सारे खुशहाल ।
देते हैं शुभकामनाएं , हम सब मिलकर ,
आया.. आया.. नया नवसंवत्सर ।

घर – आंगन को भी , हम खूब हैं सजाते ,
करके चहुओर रोशनी , घरको जगमगाते ।
उमंग और जोश , दिलों में भरकर ,
आया .. आया.. नया नवसंवत्सर ।

यही तो है ‘ सुसंस्कृति ’ हमारी ,
यही तो है ‘ हिंदुस्तान ’ की खुमारी ।
आओ नाचें गाएं हम झूम झूमकर ,
आया .. आया नया नवसंवत्सर ।

– रीझवाणी गोविन्द ‘आनंद’

गुड़ी पड़वा

चौत्र मास के शुक्ल पक्ष
की प्रतिपदा तिथि को
मनाया जाता है ये पर्व
इसे संवत्सर कहते है।

महाराष्ट्र राज्य में इसे
विशेष रूप से मनाते
वसंत ऋतु का त्योहार
इसे सब लोग कहते है।

हिंदू नए साल का पर्व
फसल आगमन का है
इस पर्व पर कई लोग
घर, गाड़ी खरीदते हैं।

आज के दिन घर के आगे
झंडा या गुड़ी फहराते हैं
रंग बिरंगी रंगोली से और
फूलों पत्तों से घर सजाते है।

सिंदूर और हल्दी से बना
स्वस्तिक बनाया जाता है
जरूरतमंद लोगों को आज
सामग्री बांटने लोग जाते है।

दीपक खरे

नवसंवत्सर

नवसंवत्सर की वैला में चेतन ! मुझमें रमना है ।
क्या आया क्या गया इसका चिंतन करवाना हैं ।
मैं हुँ अभी कहाँ , कहाँ से आया , हूँ मैं कौन ?
आगे कहाँ जाना , कौन है साथ , कहाँ है ठिकाना ?
ज्ञान, दर्शन , चरित्र व तप कितना मुझमें रम रहा हैं
यह करते मन , वचन व काया कितनी स्थिर रह रम रही हैं
हँस कर गुण बतलाता दु:खी कर अवगुण बतलाता
प्रियता का संयोग सूख बतलाता अप्रियता का योग दु:ख बतलाता
सुख – दु:ख , प्रेम – शोक , जन्म– मरण कर हम चक्कर खाते
प्रेम की धार बहाती , शोक हमें भरता यह चक्कर हम खाते
कथनी – करनी का जीवन में अन्तर कितना रहता हैं
पग – पग पर समभाव से कार्यशैली का अन्तर कितना रहता हैं
क्रोध, अभिमान, ईर्ष्या रूपी राग द्वेष का अँधियारा क्यों रहे
मन जीवट पर मैत्री से नवदीप जलाकर हम खघ्त्म करे तो अँधियारा क्यों रहे
सागारी अनशन में सोकर जिनभावित धर्म सुख में बढ़ना हैं
आत्मा के दिव्य प्रकाश में धर्म से रमकर असीम सुख में बढ़नाहै
नवसंवत्सर की वैला में चेतन ! मुझमें रमना है ।

प्रदीप छाजेड़

नव उल्लास का पर्व

हिन्दू नववर्ष एक महान उत्सव है
चौत्र शुक्ल प्रतिपदा को है आता,
ब्रह्मा द्वारा सृष्टि निर्माण का दिन
जग में नवसंवत्सर है कहलाता।
प्रभुश्री रामचन्द्र का राज्याभिषेक
इसी पावनमय दिवस पर हुआ था,
विक्रमादित्य का विक्रमसंवत चला
जो युधिष्ठिर को सिंहासनमिला था।
भक्ति से शक्ति के प्रतीक नवरात्र
मां शैलपुत्री को सब शीश नवाते,
भारत भर में नववर्षोत्सव मनता
कोंकणी उगादी कहीं बिहू मनाते।
कश्मीर में नवरेह बंगाल नवाबरसा
पंजाब होलामोहल्ला वैशाखी गाते,
महाराष्ट्र में गुडी पडवा बनता यह
गर्वित तमिलनाडु में पुतुहांडु कहाते।
सूर्योदय के साथ सृष्टि सृजन दिवस
संसार भर में हर्ष से मनाया जाता है,
स्वधर्म समाज संस्कृति से विविधता
नवकिरण नवोल्लास मन में लाता है।

शशांक मिश्र भारती

हिंदुओं का नव वर्ष

शुरुआत होती है चौत्र मास से,
हिंदुओं के वैज्ञानिक नववर्ष की,
सम्राट विक्रमादित्य के खगोलीय,
ऊर्जावान नए विक्रम संवत की।

धूम मचती है इसी दिन पे,
गुड़ी पड़वा और चेटीचंड की,
मौज मचती है इसी दिन पे,
उगादी, नवरेह व नवरात्रि की।

शुरुआत होती है इसी दिन से,
व्यापारियों के नए लेखे जोखों की,
शुरुआत होती है इसी दिन पे,
बसंत ऋतु और हिंदू पंचांग की।

भगवान ब्रह्मा जी ने इसी दिन से,
रचना की थी विशाल सृष्टि की,
मान्यता यह भी है इसी दिन से,
सतयुग के शुरू होने की।

धारणा है भगवान विष्णु जी के,
मतस्य अवतार धारण करने की,
भगवान राम जी के अयोध्या में,
धूमधाम से राज्याभिषेक होने की।

ज्योति एन भावनानी

नवसंवत्सर हमारा नववर्ष

माँ दुर्गा के अवतरण पर्व पर,
प्रकृति का रूप तो खिलने दो!
फागुन बीता चौत्र है आया,
धरा सुहानी लगने दो!
चौत्र शुक्ल की प्रतिपदा को,
भारत को नववर्ष मनाने दो!
आर्यावर्त की पावन धरा पर,
भारत का उत्कर्ष तो होने दो!
ईसवीं सन् तो पशिचम का है,
भारतीय विक्रम 2080 हमें मनाने दो!
माँ दुर्गा के नवरूपों का,
नो दिन उत्सव त्यौहार मनाने दो!
अयोध्या में राम जन्मे ठुमुक पग घरत,
पग घरत धरा को आनंदित होने दो!
टेसू फूला हुआ गुलाल,
शस्य श्यामला धरती होने दो!
नवसंवत्सर भारत की संस्कृति को,
अपना परिचम तो लहराने दो!!

डॉ उषा जलकिरण

चौत्र शुक्ल प्रतिपदा

मधुर संगीत का साज बजे,
हर पल खुशियां गले मिले,
दीपमाला से सजाओ ये पर्व,
रोशन रहे ये नूतन पर्व ।

प्रेम सौहाद्र का करें आगाज,
दिलों में फैले ज्ञान का प्रकाश,
नूतनता की छाई है बहार,
आओ मनायें नूतन त्यौहार ।

बीते पल यादों का किस्सा है,
आने वाला खुशियों का हिस्सा है,
बाह फैला कर करें दीदार,
आया गुड़ी पड़वा का त्यौहार ।

ऋतु से बदलता हिन्दू साल,
कोयल गाती हर डाल –पात,
चौत्र शुक्ल प्रतिपदा का उल्लास,
खुशी उमंग से भरा हो साल ।

वृक्षों ने किया नवल श्रृंगार,
मिष्ठानों की चहुओर बहार,
एक दूजे से गले मिल कर,
सभी मनायें नूतन त्यौहार ।।

संदीप खैरा 'दीप'

स्वागत है नववर्ष

संवत २०८० आ रहा
सभी करें अभिनंदन
उत्साह जोश दिखाएं
हो जाएं मिलकर कुंदन

सार्थक संस्कृति हमारी
हिन्दू नववर्ष को माने
गुड़ी पड़वा से आगमन
नव संवत्सर को जाने

धन्य– धान्य से परिपूर्ण
समृद्धि की मिलती राह
चौत्र– शुक्ल प्रतिपदा से
प्रारम्भ है नववर्ष माह

पावन हैं संस्कार हमारे
धारण हमको करना है
पाश्चात्यता को भूलकर
निज सभ्यता में रमना है

नव संवत्सर आया देखो
फैल रहा अनुपम उत्कर्ष
सबको मिले सुंदर जहां
पुनीत रहे उमंग व हर्ष

डॉ.अमित मालवीय 'हर्ष'

पक्का रंग

आज महफिल में ,पक्के रंग का जिक्र चला।
सबनें रंगों को,अनेक रूपों में ढाला।।
बताते रहे अपने विचार,वैज्ञानिकों की तराहँ।
किसी नें कुछ,किसी नें नीला लाल गुलाबी कहा।।
हम तो खोये थे,तुम्हारे ही ख्यालों में।
झझोड़कर! तुम कहाँ हो,किसी नें हमसे ये कहा।।
हमनें पूछा! क्या बात है? क्यूं इस कदर परेशान हो।
कुछ तो हमें बताओ,हमनें उनसे ये कहा।।
देखते रहे हमें,पागलों की तराहँ।
तुम पागल हो,किसी नें हमसे ये कहा।।
बात चल रही थी, पक्के रंग की।
तुम भी अपना,रंग बताओ।।
हमनें उन्हें, गौर से देखा।
और कहा,क्या रंग बतायें।।
कह दिया हमनें,प्यार का रंग सबसे जुदा है।
मिटा पाओगे इस रंग को,इसकी क्या खूबी बतायें।।
दूसरा रंग मिट जायेगा, दो–चार धुलाई से।
इसे मिटाओ तो,तुम्हें अपना गुरु बनायें।।
देखते रहे, हमारे चेहरे की ओर।
हमारी आंखों में,फिर तुम्हारा नजारा था।।
देख रहे थे, तुम्हारा वो रंगीन चेहरा।
शायद सबकी नजरे, समाई थी हमारी ओर।।
झझोड़कर ! उन्होनें फिर,जगाया याद से।
सबकी आंखों में आंसू थे,हमनें देखा ध्यान से।।
हम भी रो दिये, हमनें ना उनसे कुछ कहा।
प्यार का रंग सबसे जुदा है,सबनें मिलकर ये कहा।।
प्यार का रंग सबसे..........
प्यार का रंग सबसे..........

प्रमोद कुमार 'सत्यधृत'

माँ

ष्माँ ष्शब्द सुनते ही,अलग सा अहसास होता है।
इस जग में,कोई न्यारा है,इसका भास होता है।।
ममता का सागर आँखों में,नई हिलोरें लेता है।
वो आँचल मेरे हिस्से का,आँखों में पानी भरता है।।
वो आँचल मेरे........

देखा है हाल जमाने का, माँ काट रही वनवास यहाँ।
देख दुदर्शा ममता की, धरती भी बोझिल हुई यहाँ।।
ना भान रहा, ना ज्ञान रहा,श्रवण की उन तस्वीरों का।
दानव भी हुये शर्मिंदा, मानव की देख,करतूत यहाँ।।
दानव भी हुये.........

तू जग–जननी,जगदम्बा है,ऐसा मैनें सुना,हर बार।
रक्तबीज,महिषासुर वधनी, फिर भी ऐसा हाल ही क्यूँ है।
हम बेशर्मों की दुनियां में ऐसे ना मिले, आदर –सत्कार ।
छोड़ के ममता,बन रणचण्डी, सतयुग लाने में देर ही क्यूँ है ।।
छोड़ के ममता.........

पूत–कपूत सुने जग में,माँ की ममता पर दाग ही क्या ।
इक आह पे मेरी,रात जगे, ऐसी ममता ना स्वर्ग वहाँ ।।
रे संभल,रे इंशा , है वक्त अभी ।
माँ की ममता का, मोल ही क्या ।।
रे संभल, रे इंशा.......
रे संभल, रे इंशा.......

वरिष्टकवि,साहित्यकाररू–––––
प्रमोद कुमार 6सत्यधृत’

नव संवत्सर

आओआज नव संवत्सर का स्वागत करें ।।
नई आशा, विश्वास का सर्वत्र खिले ।
नव संवत्सर उत्साह प्रेम का अवसर है।
वंदन ,अभिनंदन का नव उत्सव है।
हिंदू नव वर्ष चौत्र माह से आरंभ हुआ।
मां दुर्गा का घर–घर में स्वागत हुआ ।
चेटीचंड ,गुडी ,पडवा उगादी नाम कई ।
मां, जगदंबा,शैलपुत्री स्कंदमाताकई।
नव वर्ष में परस्पर हिल मिलकर रहे ।
भारत सनातन अग्र विजयी सदा रहे ।
सुख समृद्धि बढ़े, वसुधा पुष्पित रहे ।
मनोकामना हो पूर्ण जीवन हर्षित रहे ।
धर्म भावना जन–जन विकसित रहे ।
सद्गुण बढ़े ,आस्था सदा जीवित रहे ।
मां भवानी का घर–घर में पूजन होगा ।
प्रकृति दुल्हन का रूप शाश्वत होगा ।
नववर्ष चौत्रशुक्ल प्रतिपदा जबआएगी।
फागुनके पुष्पों से धरती अब महकेगी ।
नवसंवत्सर मंगलमय हो कामना मेरी ।
नित वंश उन्नति करें यही प्रार्थना मेरी ।

अंजू श्रीवास्तव

माता रानी का दरबार

माता रानी का सजा दरबार,
सब मिल करो जय जयकार,
चलो सब हिल मिलाकर
ले पूजा का थाल चलेंगे,
पूजा करेंगे, आरती करेंगे
आराधना से माँ को रिझाएंगे
झूम– झूम सब नाचे ,गाएं
जय कारा माता का लगाएं
सब मिल करो जय जय कार
चलो सब हिल– मिलकर
शेरॉवाली का सजा दरबार,
आई शेर पर होकर सवार,
करने आई माँ दुष्टों का संहार,
भोग लगाओ, माता को मनाओ
जयकारा माता का लगाओ
सब मिल करो जय जयकार
चलो सब हिल मिलकर
नवरात्रि का आया त्यौहार
भवानी माँ का सजा दरबार,
होगा व्यभिचारियों का नाश
मिटेंगे सारे कुकर्मी
आई खुशियों का ले उपहार
लगाओ सब जयकारा
सब मिल करो जय जयकार,
चलो सब हिल– मिलकर

चंद्रकला भरतिया

चेत्र माह में नवंत्सर आया है

सबके जीवन में अनगिनत खुशियां,
नई उम्मीद और एक नया उल्लास लाया है।
आओं मिलकर इस नवंत्सर पर यह प्रण लेते हैं
भूल कर सारे जातिवाद
सिर्फ हृदय में प्रेम भाव रखेगें।
सिर्फ सच और मीठा बोलेगें
झूठ का दामन छोड़गें।
उदास चेहरों पर मुस्कान बनेगें
खघमोश जुबां के अल्फाज बनेगें।
बेईमानी से मूंह मोड़ेंगे
सच और ईमानदारी की बांह ना छोड़ेंगे।
खुशियों का पैगाम बनगें
नए सपनों की नई उड़ान भरेंगे।
यह नवंत्सर सबके लिए हो मंगलमय
इस नवंत्सर एक नए जीवन की शुरुआत करेंगे।

पूर्णिमा मंडल

नव वर्ष आगमन!

नव वर्ष का हो रहा आगमन,
विक्रम संवत में खुश हुआ है मन।
संवत्सर के हैं पांच प्रकार,
सौर, चंद्र, नक्षत्र हैं इसमें।
सावन और अधिकमास भी इसमें,
इसी को कहते हैं नव संवत्सर।
सभी इसे बड़ी खुशी से मनाते,
नए साल में धूम मचाते।
इसे मानते चौत्री पंचांग का आगमन,
वर्षों से इसे मनाया गया हर घर।
लोग एक दूजे को तिलक लगाते,
मिठाइयाँ बाँटते औ खुशियाँ पाते।
यह परंपरा है सदियों पुरानी,
सबके हृदय में है जानी–मानी।
श्स्मृतिश भी मनाती यह त्यौहार,
ऐसे ही सभी का सुखी रहे संसार।।

ज्ञानेश्वरी व्यास (स्मृति)

धरती मुस्काई है

चौत्र शुक्ल प्रतिपदा की पावन तिथि आयी है
नव–संवत्सर की बेला में धरती भी मुस्कई है
सिंदूरी किरणों के संग में खुशियों का डेरा है
कोयल कूक रही बागों में आम्र भी बौराया है

बंदनवार सजा द्वार पर शक्ति का आह्वान है
खाद्यान्न घर में लाकर किसान भी हर्षाना है
खट्टे मीठे आमों ने सबका मन ललचाया है
पत्ते पतझर में गिरे नव भी पल्लव आया है

प्रकृति नव–संवत्सर पर बलखाती आयी है
खुशबू फूलों की लेकर पवन भी चल दी है
हवा में मादकता छायी हर्ष की यह बेला है
धरती से अंबर तक खुशियों का बसेरा है

दुर्गा पूजा के साथ राम नवमी की तैयारी है
घर घर में शक्ति की आराधना का पर्व है
कलश सजाकर घर में माता को बुलाना है
नारी शक्ति का प्रतीक नवरात्र मनभावन है

प्रकृति का कण कण आज बहुत हर्षाना है
नव–संवत्सर की बेला नव उत्सव मनाया है
जगमग जगमग दीप जले उजियारा फैला है
नवरात्रि के साथ यह नव–संवत्सर आया है

डॉ अनुराधा प्रियदर्शिनी

नव वर्ष स्वागतम

स्वागत स्वागत हैं नव वर्ष
जिंदगी की बदली पतझड़
हर खुशियों की पैगाम
नव वर्ष की बगीया में
आया खुशियों की पैगाम
राम नाम की पैगाम से
खुशियों की रौनक दीपक जलाएं
आये सत्य और अहिंसा की जीत
पैगाम की जीवन राम लक्ष्मण
दीपक खुशियां लाई हर जीवन
राम नाम की जप से जीवन
मानव जीवन तर जायेगा
नवरात्रि पर्व की जय जयकार
विजय पताका लेकर हाथ मे
फर फर लहरायेंगे,
राम नाम की जयकारा से
विजय जुलूस निकालेंगे
जन सैलाब की लहरें
उठी कदम जय जयकारों से
राम नही राम की पुरुषोत्तम
विजय गाथा स्वागतम करती
नव वर्ष की खुशिया लाती

दिनेश कुमार नेताम

नव संवत्सर का आगमन

चौत्र, शुक्ल प्रतिपदा,
नव संवत्सर भारतीय पंचांग।
नव संवत्सर का हुआ आगमन
धरा ने किया रूप श्रृंगार।
हल्दी का लगा उबटन,
सरसों का पहनी अलंकार।
खुशियां दिखी फूलों पर,
रंगों का दिया उपहार।
सज गई धरा नए फसलों से
आया नव पर्व त्योहार।
गुडी पड़वा,वैशाखी चौट्रीचंड
नवरात्रि माने बांटे प्यार।
राम ने बलि का वध कर,
स्वेच्छाचारी राज का किया अंत
नव वर्ष का भारतीय,
करते स्वागत रख उपवास।
नई फसल से भोग बना,
खाते मिल संग परिवार।
लेकर संकल्प बंधुत्व का,
भूलें नफरत बांटें प्यार।

वंदना झा

करें स्वागत नूतन संवत्सर का

जगमग जगमग दीप जलाकर
इष्टदेव का ध्यान लगाकर
मनवांछित नैवेद्य अर्पित कर
प्रेम सहित मंगल गीत गाकर
करें स्वागत नूतन संवत्सर का।
आओ करें हमें ऐसी आशा
देखे ना कहीं क्षुधा पिपासा
रहे सभी निरोगी काया
दूर होवे तम अज्ञान माया
फुल सा खिले मन हर जन का।
मिलजुल सप्रेम रहे सब कोई
विरोधी ना हो किसी का कोई
सुख शांति समृद्धि चहुंओर दिखे
घर बाहर भंडार सदा पुर्ण रहे
दूर हो तम दैहिक दैविक भौतिकता का।
अक्षर ज्ञान मिले जन–जन को
राष्ट्र विकास सर्वांगीण हो
जल थल नभ पाताल सर्वत्र
मां भारती तेरी जय जय हो
मान बड़े जग में राष्ट्रध्वज तिरंगा का।

मुकेश कुमार दुबे

नवसंवत्सर

नवसंवत का सूर्य हे देखो,
नये जोश से उदय हो रहा।
बसंत ऋतु भी बहुत,
यौवन में खुश झूम रहा।।

धरा भी बहुत सजी हुई,
उसका मनभावन रूप देखो।
मादक मंद सुगंध के साथ,
बहती मलय पवन हे देखो।।

चौत्र शुक्ल प्रतिपद रविवासर,
नव संवत आया है।
जिसके आने से धरा ने,
प्रकृति को खूब सजाया है।।

फूलों पर अलि गुंजारित,
चहुं दिशि सरसों लहराई है।
सलोना,मोहना रूप लिए,
धरा में पीतांबरी छाई है।।

सभी का मन है हर्षित,
हर मानुष प्रफुल्लित है।
नवसंवत के स्वागत में,
जल,थल,नभ भी प्रसन्न हैं।।

हे नववर्ष!हम सब भारत वासी,
हृदय से स्वागत तेरा करते हैं।।

सुषमा सिंह 6उर्मि'

उत्सवी सबेरा

नूतन विक्रमी संवत मनाओ
आओ उत्सवी सवेरा मनाओ
दिकदिगंत शुभसंदेश जगे
चौतन्यअमृतरसराजवर्ष मनाओ

चंद्रमास और सौरनक्षत्र वर्ष,
शुक्लपक्ष प्रतिपदा मनाओ
दुःख दर्द को दूर ही भागकर
अभिनवसुखसागर लहेराओ

नई उमंगें नई तरंगें
नई रित नई प्रित
नीति नवल,धवलपद पथ पर
नई चाह नई राह बनजाओ।

भूलोक ,धूलोक में पुलाकित
शूक,पिक चातक पुकार बचाओ
कलियन पर वसंत सजे सदा
वसुधा पर रविकिरण बिखराओ

प्रेम प्राण मैं भरा रहे
ऐसा शौर्य तेज फैलाओ
ओजस अखिलविश्व का आगाज हो संवत मे
दिव्यज्योत आज ऐसी जलाओ द्य

श्रीमती हार्दिका विजयभई गढ़वी

नव संवत्सर–२०८०

नव संवत्सर हमें हमारे, दृढ़ निश्चय का भान करे द्य
दो हजार अस्सी में हर मन, राष्ट्रोत्थान का काम करेद्यद्य

द्वेष न हो हम सबके भीतर, अपनेपन का भाव रहेद्य
स्वस्थ चित्त और स्वतंत्र चिंतन, का भी प्रादुर्भाव रहे द्यद्य

देशभक्ति हो सबके अंदर, तिमिर मुक्त हो वर्ष नयाद्य
सभी मुक्त हों वैमनस्य से, उन्नति हो संघर्ष नयाद्यद्य

विश्वबंधुता रीत हमारी, बारह महीने साथ रहे द्य
सोच समझ कर आगे बढ़ने, का दिन–रात प्रयास रहेद्यद्य

कुशल–दक्ष हों मानव सारे, नव अभिरुचि का दौर बढ़ेद्य
बढ़े आत्म–विश्वास, साथ में सद्बुद्धि भी और बढ़े द्यद्य

अतिविशिष्ट हो सोच हमारी, मानव मूल्यों से सिंचित द्य
संस्कृति वाहक बनने को हम, खुद का ही आवाहन करें द्यद्य

प्रेमवृत्ति से पुलकित जीवन, नित–नव ध्येय प्रदान करेद्य
वादा कर ले हर इक खुद से, दूजे का सम्मान करेद्यद्य

सूर्यदेव की किरणों जैसा , मेरे देश का तेज बढ़ेद्य
विश्वगुरू होने की जानिब, दुनियाँ में संदेश बढ़े द्यद्य

हरीश कुमार सिंह भदौरिया

भारतीय संस्कृति और नव संवत्सर का उल्लास

भारतीय संस्कृति और परंपराओं में नव उल्लास का वैभव बिखेरते हुए, हम नव संवत्सर का स्वागत चौत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को करते हैं ।

हिंदू धार्मिक मान्यता के अनुसार ,चौत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को ही ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचना प्रारंभ की ।

ऐसी परंपरा कहे या मान्यता, कि अयोध्या में श्री राम जी का विजयोत्सव चौत्र प्रतिपदा के दिन घर–घर में मनाया जाता है, और प्रतीक स्वरूप इस दिन अयोध्या नगरी में प्रत्येक घर के द्वार पर धर्म ध्वजा फहराई जाती है।

किसी का भी प्रारंभ हमारे भीतर उत्साह और उमंग भरने वाला होता है ।

प्रत्येक प्रारंभ किए गए कार्य के साथ सुखद संभावनाएं स्वयं हमारे मन मस्तिष्क में प्रस्फुटित होती हैं ।

हमारी भारतीय संस्कृति अपने कार्यों के सर्जन से पूर्व प्रभु की आराधना कर, अपने आप को मानसिक रूप में प्रभु को समर्पित कर अपने कल्याण की आशा करती है।

प्रत्येक नए कार्य के आरंभ पर अपने लोगों की शुभेच्छा ,

हमारी भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा है ।

चौत्र प्रतिपदा तो भारतीय संस्कृति की भव्यता की द्योतक है।

ब्रह्मा जी ने आज सृष्टि का प्रारंभ किया ।हमारी संस्कृति सबसे अधिक प्राचीन और विस्तृत है ।

सदियों से हमारे भीतर अपने संस्कार ,अपनी परंपराओं का निर्वाह करते हुए स्वयं प्रस्तुत होते जा रहे हैं ।

आज भी भारतीय संस्कृति का बीज सूत्र अनुशासन और आपसी सौहार्द का सूत्र हमारे एकजुट होने का प्रमाण है। प्रकृति का स्वरूप इस माह उसके उल्लसित होने का द्योतक है ।

पतझड़ के बाद नई–नई कोपलों के आने का स्वागत करते

हुए ,पेड़ पौधों की प्रत्येक डाल नव वर्ष मनाने को उत्साहित सी दिखाई देती है प्रकृति।

नव संवत्सर में दो रितुओं का मिलन और साहचर्य की भावना को प्रकाशित करता है ,और आने वाले दिनों की उष्णता स्वीकार करने के लिए प्रेरित कर अपने समय चक्र को बताता है ।

कितना सुंदर संजोग होता है ,जब हम उन दिनों में प्रवेश करने वाले होते हैं ,जब प्रकृति अपने पुराने पत्तों का पतझड़ कर नई कोपलों को विकसित कर ,हमारे लिए शीतलतादायी हरीतिमा को विकसित कर रही होती है ।

धीरे–धीरे सभी वृक्ष पत्तों से आच्छादित होकर हमें छाया प्रदान करने के लिए स्वयं को तैयार करते हुए से प्रतीत होते हैं ।

हिंदू संस्कृति के नव संवत्सर के साथ ही मां दुर्गा अपने नव स्वरूपों को धारण कर हमें आशीर्वाद देने के लिए घर–घर में पधारती हैं ।

भारतीय संस्कृति में नवरात्रि का विशेष और भव्य स्थान है।

प्रत्येक घर में श्रद्धालु चौत्र नवरात्रि में मां के स्वरूपों का स्वागत में मां की महिमा को व्यक्त करते हुए भजन कीर्तन कर मां की दिव्य दृष्टि पाने के लिए लालायित रहते हैं ।

अगर हम यह कहें कि नव संवत्सर उत्सव को हम मां की कृपा के साथ नौ दिन तक आनंद रस में मग्न होकर मनाते हैं तो गलत ना होगा।

कितनी भी आधुनिकता की चादर हम ओढलें पर नव संवत्सर के साथ नवरात्रि का उत्सव और कन्या पूजन हमारी संस्कृति और परंपरा का आधार स्तंभ है ।

आप सभी को नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएं।

जया बच्चन शर्मा प्रियवंदा

नव संवत्सर

हिंदू पंचांग के अनुसार हिंदू नव वर्ष या विक्रम संवत चौत्र के महीने से शुरू होता है जो आमतौर पर मार्च और अप्रैल के महीनों के बीच आता है। भारत में विभिन्न राज्य चौत्र माह की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए चौत्र नवरात्रि, उगादी, गुड़ी पड़वा और झूलेलाल जयंती जैसे उत्सवों के साथ हिंदू नव वर्ष मनाते हैं।

इस दिन के सूर्योदय से ही ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना प्रारंभ कर दी थी। सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन राज्य की स्थापना की थी। उन्हीं के नाम से विक्रमी संवत का प्रथम दिन प्रारंभ होता है। यह भगवान श्री राम के राज्याभिषेक का दिन है। यह शक्ति और भक्ति के नौ दिन यानी नवरात्रि का पहला दिन है। राजा विक्रमादित्य की तरह शालिवाहन ने हूणों को परास्त करने और दक्षिण भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने के लिए इसी दिन को चुना था। युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।इस दिन से नया संवत्सर प्रारंभ होता है। इसलिए इस तिथि को श्नवसंवत्सरश भी कहा जाता है।

माया एस एच

नव संवत्सर

नव संवत्सर का हुआ आगाज
बजाएं मिलकर हमतुम साज
सहेज लो अपने संस्कार आज
आया नव संवत्सर त्योहार आज।

चौत्र शुक्ल की प्रतिपदा
विक्रम संवत का आरम्भ है
नई फसल की नई उमंग
लाती नई तरंग है
रीत रिवाज की सुंदर परम्परा
आज भी हमारे संग है।

सृष्टि आरम्भ के दिन घर को सजाओ
घर घर धर्म ध्वजा बंधाओ
हर धर्म के गीत गाओ
मनुष्यता का ध्वज लहराओ।

विक्रम संवत है जीवन शक्ति
इसकी चमक निराली करलो भक्ति
जुड़ा है इससे हमारा आचार विचार
धर्म, संस्कृति और त्योहार
सहेज लो फिर से अपने संस्कार।
ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्
आओ मिलकर स्वागत करें
नाचें,गायें धूम मचाएं
दीप जलाकर रंगोली बनाएं
आओ सब मिलकर नव संवत्सर मनाएं।।

सुनीता अग्रवाल

हिंदू नव वर्ष आया

जिसे हमने भुलाया।
जगजननी के, दिन कहलाते।
ऊपर से राम भूपर आते।
ब्रम्हा ने सृष्टि सृजन कीना।
सतयुग ने, था , जन्म आज लीना।
फूले पलास है, चहुंओर।
अमुआ में आए अधिक बौर।
डाली डाली कोयल का शोर।
बोले पपीहा अरु नांचे मोर।
पेड़ों में आये नये पात।
शशि भी, दिनकर सम, जगमगात।
नव वर्ष में बरस रहा पानी।
करदी किसान को हैरानी।
कुछ आई ,फसल, कुछ नहीं आई
पानी नें,आफत, है, मचाई।
ये बलराम की कैसी माया।
कल था, हंसाया, आज रुलाया।
कैसा अजब ,नव वर्ष है,आया।
खुशी के, संग, गम लाया।

बलराम यादव

नवसंवत्सर की बेला

आओ नव वर्ष की करे शुरुआत,
नवसंवत्सर की शुभ बेला है आज।

विक्रमसंवत् 2080 की शुभ घड़ी आई है,
सबके जीवन में अपार खुशियां लाई है।

ब्रम्हा जी ने सृष्टि का किया निर्माण,
नवसंवत्सर का दिन है बडा ही महान।

विष्णु जी ने लेकर मत्स्य अवतार,
इसी दिन किया था सारे जग का उद्धार।

नव वर्ष चौत्र माह शुक्लपक्ष प्रतिपदा,
सबको मानसम्मान,सुखसमृद्धि दे सदा।

इसी दिन सूर्य मेष राशि में करते प्रवेश,
चौत्र माह का नवरात्रि मनाता पूरा देश।

अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर भगाए,
चलो विक्रम संवत हिंदू नव वर्ष मनाए।

विक्रमसंवत जीवन में अगाध प्रेम बरसाए।
सबको नवसंवत्सर की हार्दिक शुभकामनाएं।

ईश्वर साहू (आसरा)

नव संवत्सर

नव संवत्सर का आगमन,
साथ लाएगा शांति अमन।
नव संवत्सर से आश भारी,
होगी पुरी मनोरथ हमारी।

सुख–सम्पदा लेकर आएगा,
नव भारत भाग्य जगाएगा।
लिखेगा हिन्द इतिहास नया,
बेजुबानों पर भी होगी दया।

पथ प्रदर्शक मेरा हिन्द होगा,
विश्व करेगा प्राणायाम योगा।
उच्च शिखर पर होगा भारत,
रक्षा क्षेत्र में मिलेगा महारत।

पुनःविश्वगुरु होगा हिन्द मेरा,
मिट जाएगा घनघोर अंधेरा।
बीस सौ अस्सी नव संवत्सर,
हिन्द की अभ्युदय को तत्पर।

जय हिंद जय हो मेरा भारत,
सबमें भावना भरे परमारथ।
सुरेश की मन में पुरी आशा,
भारत के पक्ष में होगी पासा।

सुरेश कुमार चन्द्रा

नवसंवत्सर की नूतन बेला में

नव दीप जले नव फूल खिले,
भूल चलें सब शिकवे गिले द्य
नवसंवत्सर की नूतन बेला में,
आओ हँसकर सबसे मिलें द्यद्य

क्या खोया और क्या पाया ,
कौन अपना कौन पराया द्य
कौन हारा कौन जीत गया,
साल पुराना बीत गया द्य
चलो फिर से कदम बढ़ाएं,
नया है कारवाँ नई मंजिलें द्य
नवसंवत्सर की नूतन बेला में,
आओ हँसकर सबसे मिलें द्यद्य

सुख – दु:ख की कई बातें हुई,
ना जाने कितनों से मुलाकातें हुई,
दर्द से दिल रोया भी,
कुछ पाया तो कुछ खोया भी द्य
जिंदगी के ये पल ना गवाएं,
चलते रहेंगे ये सिलसिले,
नवसंवत्सर की नूतन बेला में,
आओ हँसकर सबसे मिलें द्यद्य

डॉ.राखी (गुड़िया)

नौ देवियों का त्योहार

लाती हैं ये लाखों खुशियाँ,
मिटाती ये हृदय के दुरूख,
करती हैं ये सभों के जीवन,
सुख से भरपूर,
इनका प्रवेश होता हैं शुभ,
कुचल डालती सारी बुराइयों को,
विशेषकर लाती हैं,
कन्याओं के जीवन में आशीष,
कलश जो होती हैं जौ की,
सुख,शान्ति, समृद्धि का मान्य,
देता ये त्योहार भरपूर खुशियाँ,
उपवास सबसे ज्यादा माना जाता पवित्र,
होती हैं इन सब से इच्छाएँ पूरी,
हे माँ दुर्गा ये इच्छा मेरी,
सभों के जीवन में लाना,
लाखों खुशियाँ एवं आशिष।

हर्षिता जॉर्ज

नव वर्षारंभ

नव वर्षारंभ नए उल्लास, नए संकल्प का अवसर होता है। किसी कार्य का आरंभ अच्छा हो तो उसके सफल होने या अच्छे से सम्पन्न होने या अच्छी कार्य स्थिति के निर्माण की संभावना बढ़ जाती है। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है, क्योंकि आरंभ शुभ होने पर उससे उससे निर्मित उत्साह का वातावरण आगे कार्य करने के लिए भी अनुकूलता का सृजन करता है। नववर्ष के पहले दिन को उत्सव के रूप में मनाने की प्रथा इसी आशा–अपेक्षा से प्रचलित हुई।

दूसरा पक्ष यह भी है कि किसी कार्य के आरंभ का समय कौन–सा तय किया जाए जिससे परिस्थितियां अधिकतम अनुकूल हो सकें? जैसे धन की बुआई के लिए बरसात की शुरुआत अनुकूल होती है, गर्मी या सर्दी नहीं। वेद पढ़ने के लिए छह वेदांगों का भी अध्ययन करना पड़ता था जिनमें से एक है ज्योतिष। यह ग्रह–नक्षत्रों के स्वरूप, उनकी गति एवं स्थिति और अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव का आकलन करता है। तदनुसार वैदिक यज्ञों का समय–निर्धारण ज्योतिष गणना के परामर्श से होता था, ताकि ग्रहण, वर्षा, ओले या आंधी आदि से बचा जा सके। वर्ष के रूप में काल की गणना पृथ्वी और चंद्रमा द्वारा सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करने में लगने वाले समय से की जाती है। इसे एक संवत्सर कहते हैं।

ग्रेगोरियन काल–गणना अपनाने वाले पाश्चात्य देशों में 31 दिसंबर तथा 1 जनवरी के मध्य की रात्रि के मध्यबिन्दु से नववर्ष का आरंभ माना जाता है। नववर्षारंभ चौत्र मास के शुक्लपक्ष के प्रथम दिन वसंत ऋतु के सूर्योदय से मानना ही विवेक सम्मत है। ऋतु विविधता वाले भारत में छह ऋतुओं में शिशिर के पतझड़ के बाद नए पत्तों से सृष्टि को सजाता–संवारता वासंती मधुमास उल्लास, उत्साह एवं स्फूर्ति का नैसर्गिक स्रोत है। यह नववर्षारंभ का सर्वश्रेष्ठ समय होने का प्रमाण है।

नव संवत्सर का आरंभ न केवल सम शीतोष्ण एवं नवोन्मेषशील ऋतु में होता है, अपितु संसार में प्रचलित संवत्सरों के अन्य दोषों से भी यह वैज्ञानिक दृष्टि से संशुद्धिकृत है। पहली जनवरी से शुरू होने वाला नववर्ष तो सूर्य के सापेक्ष हर साल उसी समय शुरू होता है, लेकिन इसमें चंद्रमा की उपेक्षा की गई है। चंद्रमा से भी पृथ्वी पर कई

प्रभाव पड़ते हैं। पूर्णिमा और अमावस्या से समुद्र के ज्वार–भाटे का संबंध तो है ही, मानव की मानसिक अवस्था पर भी उनका प्रभाव देखा जाता है।

दूसरी ओर, मुस्लिम हिजरी काल गणना पूर्णतरू चंद्रमा की गति पर निर्भर है, जबकि चंद्र वर्ष सौर वर्ष की तुलना में 11 दिन से कुछ अधिक छोटा होने से रोजे–रमजान जैसे सभी अवसर सभी ऋतुओं में घूमते रहते हैं, कभी भीषण गर्मियों में तो कभी बहुत ठंड या वर्षा में। वहीं, भारतीय नववर्ष के आरंभ की तिथि के निर्धारण में सूर्य एवं चंद्र, दोनों की गतियों का समन्वय किया गया है। चंद्र मास सौर मास के साढ़े उन्तीस दिनों में पूरा हो जाता है। अतरू पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए चंद्रमा सूर्य की परिक्रमा 354 दिनों में पूरी कर लेता है। यदि सौर तथा चंद्र वर्षावधि के इस अंतर को छोड़ दिया जाए तो मुस्लिम काल–गणना जैसी स्थिति हो जाएगी। उस विसंगति को खत्म करने के लिए तीन वर्ष में एक बार चंद्र वर्ष में एक मास बढ़ा दिया जाता है। यानी एक महीना दुबारा चला दिया जाता है जिसे अधिमास कहते हैं। इससे ऋतु और मास में विसंगति नहीं आती। नव संवत्सर या नववर्ष सदैव चौत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (प्रथम तिथि) से प्रारंभ होता है जो निरपवाद रूप से सदैव वसंत ऋतु में ही आता है, क्योंकि त्रिवार्षिक अधिमास–संशोधन से चंद्र और सौर वर्षों की गणनाओं में तालमेल बना रहता है।

मकर संक्रांति, मेष संक्रांति इत्यादि सूर्य के कुछ संक्रांति दिवसों के अलावा नवरात्रि, रामनवमी, अक्षय तृतीया, गुरु पूर्णिमा, रक्षाबंधन, कृष्ण–जन्माष्टमी, विजयादशमी, दीपावली, वसंत पंचमी, शिवरात्रि, होली तथा कुछ क्षेत्रीय और विभिन्न संप्रदायों के संतों की जयंती जैसे अधिकतर प्रमुख पर्वोत्सव प्रायरू चंद्रमा की तिथियों के अनुसार ही मनाए जाते हैं। लेकिन कालक्रम की शुद्धता के लिए आध ाार सौर गणनाओं को बनाकर संशोधन चंद्र गणनाओं में किया जाता है। ऐसा तथ्यग्राही वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण होता है।

चन्द्र प्रकाश

मंगलमय हो नूतनवर्ष

मंगलमय हो नूतन वर्ष । चहु दिश छा जाये शुभ हर्ष ।
सर्व जन का होवे कल्यान ।
संवतसर यह आप सभी का करवावे सम्मान ।
शक्ति का सब सम्मान करें । आओ देवी का ध्यान धरें ।

नव देवी का हम सब को अब करना है वंदन ।
सब के सुन्दर भाल मध्य में लगा रोरी चंदन ।।
भवन पर भगवा ध्वज फहराय ।जगत की जबै समझ में आय ।
सनातन धर्म है सदा महान ।...................................१

माता पिता सुत परि पुर जन सब हो प्रसन्न भारी ।
सकल विश्व में भारत माँ की महिमा बड़ी न्यारी ।।
जल थल नभ में विजय ही छाय । रक्षा करवें ज्वालपा माय ।
पाये यह विश्व गुरु का मान ।.................................२

शासक सब सद बुद्धि पावें व्रत सेवा का धारे ।
सबका हित सबका विकास हो एक भाव धारे ।।
समता समरसता सद भाव । देश हित राष्ट्र भक्ति का चाव ।
करें सब जन जन का कल्यान ।.................................३

बढ़ें विश्व में शक्ति सदा भारत की जय होवे ।
बढ़ें पुण्य प्रताप देख कै वह शत्रु जले रोवे ।।
होय नापाक इरादे ध्वस्त । दुश्मन दबे दुखी हो पस्त ।
जय जय करवें जगत जहान ।.................................४

राजेश तिवारी 'मक्खन'

नव संवत्सर तुम्हें बधाई

मंगलमय शुभ घड़ी है आई ,
नव संवत्सर तुम्हें बधाई ।
बीसा सौ अस्सी संवत्सर ,
खुशियाँ बाँट रहा घर– घर ।
है संवत्सर का पिंगल नाम ,
शुभ फल देना उसका काम ।
बाईस मार्च चौत्र गती आठ ,
आकर के लाया पूजा–पाठ ।
शुक्ल पक्ष तिथि प्रतिपदा ,
बुधवार सबको शुभहो सदा ।
बुध राजा शुक्र मंत्री पद पर ,
गुणगान करेगा इनका हर ।
बासन्ती रंग से रंगा देश है ,
रंग बिरंगा बना हुआ भेष है ।
मनमोहक है सारा परिवेश ,
खुशी में झूम रहा है देश ।
ईश्वर से बस यही कामना ,
आपदाओं से हो न सामना ।
सुख – सम्पन्न रहे जग सारा ,
है ईश्वर ही सबका सहारा ।

डॉ.सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी

तुम भी आ जाओं

देखों आया नया मौसम बहारों का
मिलन के गीतों का इन नजारों का
खुशबू फैली है उडकर चमन में
कोई खिल गया है फूल उपवन में
नहीं देखी है हमने कोई मायुशी
देखों आया है साल नवसंवत्सर का
पीली सरसों बन के काली आई है
गेहूं की बलिया देखों पक आई है
मस्त मस्त हुई मिट्टी खलियानों की
जैसी सजी है कोई दुल्हन सजना की
खुशी छाई है देखों उमंगें आई है
तन बदन गाता फिरता है देता दुआए
मन में उल्लास है देखों बादल छायें
बहन बेटियां आई पीहर में खुशी मनाने
दे दों जी अब हमें भी नवसंवत्सर की बधाई
देखों बहन घोटली ले बना के चुरमा लाई
मिलन के गीतों का इन नजारों का
कोई मोल न दे सकता इन इशारों का

वीरे सागर महासर

आ रहा नवसंवत्सर११

शीतल मंद सुगन्ध ,
चल रही है,हवाएं,
इधर उधर,झर–झर–झर।
टेसू और सेमल के,
पंखुड़ियां बिछ गईं हैं,
सकल पथ पर।
शांत सरोवर में भी
उपज रही हैं,
अब नई लहर।
थल को छूने ,
बेताब हैं पानी,
तट को जाते हैं,
रह–रहकर।
रजत मौर से
सज गई अमराई,
मुरली धुन बाजे,
शाखा पर।
प्रकृति में रंग ,
जीव में है उमंग,
आ रहा है,नवसंवत्सर।
आ रहा है........

जीवन चन्द्राकर 'लाल'

दीप जलाओ खुशी मनाओ

तन में मन में सारे घर में नव संवत्सर की शोभा
सारी प्रकृति न्यारी प्रकृति फूलों से छवि पूरित है

दुर्गा माता के पूजन से शुरू हो गया नव संवत्सर
साधु जन को साधन बाटें सात्विक शुद्ध कहलाएँ

बीती बातें भूलें हम स्वच्छ हवा खड़ा काल धवल
दीप जला कर पाँच दिशा में पंचभूत हम याद करें

पावन धरती श्यामांबर है जीवन सबका कोमल हो
परिश्रमी हो जयी बनो तुम संकट वन से बचे बढो ।

शीतकाल की शीतलता व ग्रीष्मकाल की आतपता
मध्यबिंदु को छूता फिर नव संवत्सरोत्सव आता है

पतझड़ की कटुता हम भूले पादप में नव फूल लसे
पशुपक्षी व सकल जीव गण प्राकृतिक छटा में खोए

नाच नाचकर खुशी मनाकर खेतों की ओर निकले है
प्यारे सारे किसान को श्रम के फल मिलने की वेला है

विशद गगन के टिम टिम तारक शुभ स्थिति में रहते है
शुभ मुहूर्त है सर्व कार्य का चिड़ियों के साथ राग भरो ।

आनन्दकृष्णन एड़चेरी

शुभ मंगल बेला

नवसंवत्सर की नव बेला आई.....
नवदीप –नवफूल से धरा को सजाएं !
जीवन उपवन महकाएं......
चलो फिर प्रेम भाव से आगे कदम बढ़ाएं !
एक नयी मंजिल की और बढ़ पाएं..
नवसंवत्सर कुछ ऐसे हम मनाएं !
दिव्य सनातन संस्कृति की यह परंपरा....
शुभ मंगल पावन समृद्धि का रेला !
नवसंवत्सर का प्रथम मॉ जगदम्बा आगमन....
मॉं के आशीर्वाद से होता भक्तों का कल्याण !
मॉ की महिमा अपरम्पार....
मॉ करती असुरों का संहार !
सबके मन में नव उमंग हो......
भक्ति भाव से आप्लावित मन हो!
खुशियां मनाएं हम करें सहर्ष वंदन...
नवसंवत्सर तुम्हारा हृदय से करते अभिनन्दन !

निधि बोथरा जैन

नव संवत्सर

उपवन का चितचोर नजारा
कली फूल इठलाता यौवन
सादगी है श्रृंगार किए
हर्षित हो रहा सब तन मन
नया साल खुशियों की बेला
भर रहा उल्लास से मन
मन की कालिक दूर भगाकर
सुंदर सोच समाहित करना
नहीं जोश से नए वर्ष का
सब मिलकर स्वागत करना
मिटटी की भीनी सी खुशबू
करती है मनमुग्ध सदा
उड़ती मेडो की वो धूल
मेहनत उल्लास लिए
खेतों में है झूमे बैल
खुशियों से स्वागत करते
जितना नूतन वर्ष का
तेज हवा चले अति सुंदर
शीतलता सी मन में जागे
खुशहाली से झूम झूम कर
नूतन वर्ष का स्वागत करते
चूल्हे में बन रहे पकवान
सब मिलवा रहे मंगल गान
ढोल नगाड़ा नृत्य हो रहा
सब मना रहे नित नया साल

नीता सिंह

नवसंवत्सर

मिलजुल कर आओ हम सब,
नूतन वर्ष मनाए।
नाचे गाए खुशी मनाएं,
समता रस बरसायें।।
नूतन वर्ष मनाए भैया,
नूतन वर्ष मनाए।
मिल जुल करके आओ हम सब...

बीते वर्ष हमारे अब तक,
जैसे गुजरे भाई।
बीते कल में खोकर हमने,
चिंता खूब जताई।।
उन बातों में मिला कभी क्या,
फिर भी उलझ रहे हैं।
धर्म संस्कृत मर्यादाए ,
पीछे छोड़ रहे हैं ।
नई सोच हघे नई उमंगे,
नव सोपान सजाएं।।
नूतन वर्ष मनाए भैया,
नूतन वर्ष मनाए।
मिलजुल कर आओ हम सब....

जहरीली पश्चिमी सभ्यता,
विष धर रूप लिए है।
खानपान पेहरावन के ,
वेढगी चलन हुए है।।
युगों युगों से इस धरती पर,
आदर्श बन रहे हैं।

किशोरी लाल जैन बादल

नव संवत्सर

नव संवत्सर 22 मार्च 2023 नव संवत्सर विक्रम संवत 2080 को बुध होंगे राजा।
नल नामक हिंदू नव वर्ष का आरंभ चेत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को नूतन वर्ष या नव संवत्सर के रुप में मनाते हैं।
नव संवत्सर शुक्लपक्ष से आरंभ वह मानते हैं कृष्ण पक्ष से मलमास आने की संभावना रहती है।
चौत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को ष्प्रवराष सर्वोत्तम कहते हैं इसका महत्व बहुत अधिक होता है।
सृष्टि का संचालन का दायित्व इसी दिन सभी देवताओं ने संभाला था।
अथर्व वेद तथा शतपथ ब्राह्मण में भी उल्लेख माना जाता है।
महान सम्राट विक्रमादित्य के संवत्सर का यही से आरंभ माना जाता है।
शक्ति संप्रदाय के अनुसार इसी दिन से नवरात्रि का शुभ आरंभ होता है।
चौत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा रेवती नक्षत्र के विष्कुंभ योग में भगवान विष्णु ने मत्स्यावतार लिया था।
माना जाता है इसी दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण किया था।
यह भी मानते हैं ब्रह्मा जी की सृष्टि निर्माण में जीव जंतु, देवी–देवता, ऋषि मुनि ,मनुष्य, नदियां, पर्वत ,राक्षस ,यक्ष गंधर्वों का पूजन किया जाता है।
चौत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को बारह महीने का काल विशेष संवत्सर माना जाता है।
सावन संवत्सर,चान्द्र संवत्सर, सौर संवत्सर मुख्य तीन संवत्सर होते हैं।
चौत्र मास में वृक्ष व लताएं पल्लवित हो पुष्पों से लदी होती है।
इस माह में वास्तविक मधुरस पर्याप्त मात्रा में मिलता है।
मैं वैशाख को माधव भी कहा जाता है इसमें मधुर रस का परिणाम मिलता है।
इसी तरह नव संवत्सर प्रारंभ होता है एवं नववर्ष का आरंभ होता है।

लता सेन

कुछ ऐसा हुआ

कुछ ऐसा हुआ, नूतन वर्ष के सुंदर मौके पर,
खुशहाली है हवाओं में, तो कहीं काली घटाएं छाई।
कहीं कलश स्थापना, साथ नवरात्रि की शुरुआत हुई,
माँ के मंदिर में भक्तों ने, आज लाल ध्वजा लहराई।

रमजान का आगाज हुआ, खुदा की इबादत हुई,
घर–घर रोजे ने नवाज का,बिगुल बजाकर धूम मचाई।
बदला मौसम,बदली प्रकृति, पंछी सब चहक उठे,
मौसम मनभावन हुआ, धरा ने अंबर को गुहार लगाई।

नूतन वर्ष के, गुड़ी पड़वा का है पर्व अनोखा,
काठ की लकड़ी, रोली,चंदन,वस्त्र,पुष्प से सजाई।
फसल पकी खेतों में, धन–धान्य का आगमन हुआ,
आज लोगों ने बैसाखी पर, एक–दूजे को दी बधाई।

आदि–शक्ति के द्वार में, भीड़ का बड़ा सैलाब उमड़ा,
भक्तों ने भागीरथी गंगा में, आस्था की डुबकी लगाई।
कोयल ने मधुर तान छेड़ी, मंजर सब गुंजित हुआ,
कुछ ऐसा हुआ प्रकृति में,नव–संवत्सर मधुर बेला आई।

सचिन लोधी

नूतन वर्ष

सुख समृधि वैभव लाया
नव वर्ष उत्सव है आया
नया दिन नई ऊर्जा लाया
खुशियों का नव दीप जलाया।
खेतो मे है धूम मची
किसान मंद मंद मूस्काया
धरा सजी दुल्हन की भाँति
सूरज ने उजास् फेलाया।
गिले शिकवे दूर करे हम
एक नई उड़ान भरे,
पंछी ने सुंदर गीत है गाया
नया सबेरा फिर से आया।
भूलि बिसरी दुःखद वो यादे
भुला मन वो बीती बाते
रात गई , अब हुआ सबेरा
डाला फिर खुशियों ने डेरा।
भूतकाल मे भटका था मन
भविष्य हुआ जगमग् सुनहरा
पल पल बिता, ये वक्त अल्बेला
क्या था तेरा और क्या मेरा।
प्रेम भाव से गले लगाओ
सुंदर रिश्ते बखूबी निभाओ
स्वागत कर नव दीप जलाओ
संदेशा लाया नूतन बर्ष नवेला।

नंदिनी तोमर

आएगी फिर से बहार

नव संवत्सर देखो है आया,
खुशियों की सौगात लाया।
तुझको भाया मुझको भाया,
नवजीवन के रंग यह लाया।
चौत्र वैशाख जेठ आषाढ़ ,
निकलेगी सबकी बारात ।
गुड़ी पड़वा, उगादी,
बैसाखी और चेती चंडी आएंगे।
सबके जीवन में खुशियों की,
बारिश कर वे जाएंगे ।
नव संवत्सर देखो है आया....स
मां वैष्णो की बरसेगी नेमत,
नव दुर्गा का होगा पूजन ।
ब्रह्मा जी को नमन करेंगे,
नित नित लोग हवन करेंगे।
जीवन में होगा संचार,
आएगी फिर से बहार ।
नव संवत्सर देखो है आया...स

श्रीमती रेखा हिसार

नव संवत्सर

हे सुस्वागतम हिंदू नव वर्ष का ।
आनंद , उत्साह , खुशियों और हर्ष का।

आता है चौत्र मास में लेकर मां दुर्गा को।

नौ दिन पुण्य पवित्र हैं ,
मिले मां दुर्गा का आशीष।

सजाएं घर आंगन ,
घर में रंगोली बनाएं।

लगाए आंगन तुलसी माँ को ,
चरण उनके घृत दीप जलाएं।

करें हवन रखे व्रत ,उपवास ।
पूर्ण होगी मनोकामना ,इच्छा ।
मां दुर्गा पर रखो विश्वास ।
हिंदू नववर्ष के दिन गुड़ी पड़वा व उगादि मनाते ।
प्रातः काल स्नान उपरांत ,
गुड़ और नीम के पत्ते खाते हैं ।
हे ये पर्व अंधकार से प्रकाश की ओर, जाने का नूतन वर्ष अपना है
खुशियों से मनाने का।
हाथ जोड़ हम करे वंदन अपने इष्ट और महेश का।

श्रीमती गोल्डी अधिकारी

नवसंवतसर

हिन्दू नव संवतसर आया,
चहुँ ओर हरियाली लाया।
नव संवतसर, नव कोपल का,
हम सब मिल स्वागत करें।
प्रतिपदा नवरात्रों पर,
हम माँ का गुणगान करें।
पूर्व से उदित सूर्य की लाली,
भर दे जीवन में खुशहाली।
बसंत ऋतु की सरसों पीली,
पुष्प की सुगंध से हवा नशीली।
मधुर बयार और सुन्दर उपवन,
भँवरे करते रहते गुंजन।
प्रकृति का देखो तुम नव यौवन,
मन को देते हैं ये प्रलोभन।
नवसंवत की बात निराली,
सबको देती है खुशहाली।
हिन्दू नव संवतसर आया,
चहुँ ओर हरियाली लाया।

दिप्ती भारद्वाज श्चेतनाश

नवबेला

प्रकृति नव श्रंगार,
मद्धम चले बयार,
महुआ पुष्प बहार,
रम्य रूत छा गई।

अंबुआ से लदी डाली,
किसलय मतवाली,
कोयल गाए निराली,
मन बहला गई।

पुलकित तरू लता,
प्राणियों में हर्षता,
मधुमास प्रसन्नता,
द्वारे–द्वारे आ गई।

चौत्र शुक्ल प्रतिपदा,
मां दुर्गा हरे विपदा,
सुख, आरोग्य, संपदा,
नवबेला आ गई।

सपना सी.पी. साहू 'स्वप्निल'

आओ नवसंवत्सर मनाएं

आओ हम ,नव संवत्सर बनाएं ,
आओ हम ,झूमें ओर गाएं,
आओ हम ,ढ़ेरों खुशियां मनाएं ,
हमारी अधूरी इच्छाएं ,अधूरे स्वपन ,
और हमारे ,सर्वस्व अधूरेपन को पूर्ण करने का,
पुनः दृढ़ संकल्प को दोहराएं ,
आओ हम ,नववर्ष मनाएं ,
आओ हम ,खुशियां मनाएं ,
आओ हम,नवदिवस,नवप्रभात में, नववर्ष मनाएं,
आओ हम ,सब में ,नव संकल्प ,नव ऊर्जा ,
नव उम्मीद और नवस्वपन की अलख जगाएं,
आओ हम ,नववर्ष मनाएं ,
आओ हम इस कायनात में,
पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण में ,
भारतीय सनातन,समानता ,सत्यअहिंसा,
जियो और जीने दो का ,मानवतावादी संदेश,आत्मसात कराएं,
आओ हम, नवसंवत्सर मनाएं,
आओ हम, झूमें और गाएं,
आओ हम ,ढेरों खुशियां मनाएं,

राजपाल

नव संवत्सर

उपवन का चितचोर नजारा
कली फूल इठलाता यौवन
सादगी है श्रृंगार किए
हर्षित हो रहा सब तन मन
नया साल खुशियों की बेला
भर रहा उल्लास से मन
मन की कालिक दूर भगाकर
सुंदर सोच समाहित करना
नहीं जोश से नए वर्ष का
सब मिलकर स्वागत करना
मिटटी की भीनी सी खुशबू
करती है मनमुग्ध सदा
उड़ती मेडो की वो धूल
मेहनत उल्लास लिए
खेतों में है झूमे बैल
खुशियों से स्वागत करते
जितना नूतन वर्ष का
तेज हवा चले अति सुंदर
शीतलता सी मन में जागे
खुशहाली से झूम झूम कर
नूतन वर्ष का स्वागत करते
चूल्हे में बन रहे पकवान
सब मिलवा रहे मंगल गान
ढोल नगाड़ा नृत्य हो रहा
सब मना रहे नित नया साल

नीता सिंह

नव संवत्सर का आगमन

नाम है जिसका विजय पताका,
जीवन जिससे है महका।
है नव वर्ष का आगमन,
जीवन में करते मनन।
नव दुर्गा की उपासना शुरु,
जीवन में है हमारी गुरु।
है मन में हर्षोल्लास,
जीवन में है खुशहाल वास।
है मन बड़ा उत्साहित,
जीवन में बस है हित।
नव वर्ष लाया खुशियों की भोर,
जीवन में हर पल है प्रकाशित डोर।
घर–घर देते खुशियों के संदेश,
है प्रफुल्लित पूरा देश।
मुस्कान से भरे हर चेहरा,
जीवन पर है चमक का पहरा।
बस प्रेम का है आगाज,
जीवन का है साज।
नव वर्ष खुशियाँ है लाये,
जीवन में उमंग फैलाये।
सृष्टी का है निर्माण,
जीवन का है ज्ञान।
बस प्रेम भाव का है त्योहार,
जीवन में न हो किसी की हार।
है गुढ़ी पाडवा का त्योहार,
जीवन का है उपहार।
मंगलकारी बने जीवन गर्व,
नव संवत्सर का पर्व।

भूमिका शर्मा

नवसंवत्सर

नवसंवत्सर की
प्रथम रश्मि का
करें अभिनंदन...

शुभ स्वरों से बजे शंख..
मधुर प्रफुल्लित,
नव चिंतन से हो
दुष्ट प्रवृत्तियों का अंत३

नवसंवत्सर में हो३
नयी सोच
नया जोश
नया गीत
नया संगीत
नयी ऊर्जा
नयी उमंग...

लाए नवसंवत्सर
हमारे जीवन में..
खुशियां ,उत्साह
और हर्ष...

नीना महाजन नीर

आओ नूतन वर्ष मनाएं

आओ हम ,नूतन वर्ष मनाएं,
आओ हम अद्‌भुत,अद्वितीय खुशियां मनाएं,
आओ हम, सनातन संस्कृति का,
नवदीप जलाएं ,नव फूल खिलाएं,
आओ हम ,नूतन वर्ष मनाएं,
आओ हम,नूतन दिवस में,
नूतन प्रभात में, नूतन वर्ष मनाएं,
आओ हम,अद्‌भुत,अनूपम ,
ओर अद्वितीय खुशियां मनाएं,
आओ हम ,इस जग के तमस को हरने का,
दृढ़ संकल्प दोहराएं,
आओ हम ,अपने अधूरेपन ओर अधूरे स्वपन को ,
पूर्ण करने कीओर बढ़ते जाएं,
आओहम,अपने सर्वस्वअधूरेपन,अधूरे स्वपन को,
पूर्ण करने का, दृढ़ संकल्प दोहराएं,
आओ हम, इस जग में,सनातन समानता,
सत्य, अहिंसा ,निष्काम कर्म,जियो और जीने दो,
और सच्ची मानवता का ,महान संदेश ,
निरन्तर फैलाते जाएं,
आओ हम, नूतन वर्ष मनाएं,

सपना

नवसंत्वर

सिन्दूरी भोर लिये आया नववर्ष,
की हर दिल को रोशन कर जाऊँ,
सुखद सुप्रभात ले आया नववर्ष,
सबके दिलों में प्रकाश की सविता बन जाऊँ।

प्रेम और सौहार्द से बीते जीवन का हरपल,
भटके अपनों की राह बुन जाऊँ,
आई हैं बहारें मुग्ध हो नाचें हम और तुम,
के टूटें सपनों के टुकड़े चुन लाऊँ।

कोयल गाएं डाल–डाल पात–पात,
के सबके दिलों को जोड़ सकूँ,
मीठी बोली से करते सब एक दूजे का दीदार,
के जंग लगे दिलों के तालों को तोड़ सकूँ।

चौत्र माह की शुक्ल प्रतिपदा का है अवसर,
इसलिए हिन्दू धर्म में मैं गुड़ी पड़वा कहलाऊँ।
नीम–गुड़ी को तेलहल्दी चाँदी कलश से स्नान कराएँ,
गुड़ी की अनेक कथाएँ जुड़ी मुझसे नवसंत्वर पताका फहराऊँ।।

इस दिन ब्रम्हा जी ने सृष्टि की रचना की,
गुड़ी का महत्व सबको बतलाऊँ,
श्रीरामचंद्र जी ने बाली के अत्याचारों से लोगों को मुक्त कराया,
हिन्दू में हिन्दूत्व बनी रहें मानवता का नवप्रकाश फैलाऊँ।

उषा श्रीवास वत्स

नववर्ष

करें स्वागत नव वर्ष का नव उम्मीद नव आस से
बढ़ते रहना है सदैव आगे, सफलता का वरण करना है।
भूलना है नाकामयाबियों को बस अब आगे का ही सोचना है
सीखना है पिछली भूलो से रुकना नहीं सदेव आगे ही बढना है।।
करे स्वागत नव वर्ष का ——

करें ऐसे भारत की कामना जिसमें राम राज्य की स्थापना हो
हो आतंक का खात्मा बेईमान, भ्रष्टाचारियों का मुंह काला हो।
सच की राह चलने वाले सच्चे ईमानदार नागरिकों का सम्मान हो
हो अमन चौन जनता में,दहशतगर्दी,गुंडागर्दी का अंत हो।।
करे स्वागत नव वर्ष का ——

हो नारी का सम्मान,बलात्कारियों को सरेआम फांसी हो
सम्मानित हो महिलाएं उन पर अत्याचार खत्म हो
लिंग परीक्षण,दहेज प्रथा,बाल विवाह भी अविलंब बंद हो
पुत्र हो या पुत्री घर में स्वागत उनका एक समान हो।।
करें स्वागत नव वर्ष का ——

आएंगी हर कदम पर जीवन की राह में मुश्किलें बंदे
रखकर बुलंद हौसले तू,मंजिल की तरफ बढा चल बढा चल।
बन जा एकलव्य शिशिर अपने लक्ष्य का संधान कर
नव वर्ष में तू दीनदुखियों का भला कर उनकी सेवा कर।।

शिशिर देसाई

नूतन वर्षाभिनंदन

करें स्वागत हिन्दू नव वर्ष,
नव प्रभात का,
करें सत्कार सनातन संस्कृति ,
सभ्यता की बात का।
नव सुधा, नव लय, नव रस,
नव रंग के विचारों से,
रंगे हुए सब।
हो वर्ष नव उमंग, नव तरंग
नव सौगात का।
विमल हृदय में कमल कली सी कोमलता,
बहा करे प्रेम, करुणा और ममता।
दूर हो राग, द्वेष, नफरतें,
वर्ष हो सद्भाव का।
एकता की ज्योत से,
हो जगमग मानव सारे,
विशाल गगन में जैसे
टिमटिमाते स्वर्णिम तारे।
वर्ष हो जन–जन के साथ का।
ब्रह्माजी की नवल सृष्टि,
मीन अवतार की कृपा वृष्टि।
आगमन माता रानी का,
हो जागरण दिव्य रात का।
चारों दिशाओं के खुल द्वार,
लेलो सस्मित प्रकृति के उपहार।
कुदरत के मन कहां भेद
जात–पात का?
करें स्वागत नव वर्ष,
नव प्रभात का।

मालिनी त्रिवेदी पाठक

कण–कण मुसकाया

धूम मची है नवसंवत्सर, कण–कण अब मुसकाया है।
आम बौर सह कली सजी है, महुआ क्यों शरमाया है।।
दिनकर नभ को चूम रहे हैं, पेड़ छिपी हर छाया है।
पिंगल नवसंवत्सर देखो, धूमधाम से आया है।।

बुध है राजा, सन् अस्सी का, शुक्र मंत्री बन आया है।
वर्षा बढ़िया, धन धान्य है, पत्रा यही कहाया है।।
लग्न भली अति है भारत की, उच्च मान पद पाया है।
जी–सम्मेलन, हो भारत में, गौरव खूब समाया है।।

फसल पकी खेतों से आयी, चना खूब चर्राया है।
घर–घर बजे बधाए अब तो, हर किसान हरषाया है।।
जय माता दी गूँज उठी है, नव वासन्तिक भाया है।
ब्रह्म दिवस प्रतिपदा हमारी, सुरभित होती काया है।।

धरती अंबर झूम रहे हैं, कोकिल कूक सुनाया है।
हवन हो रहे हैं हर घर में, देवी रूप सुहाया है।।
भारत का नववर्ष सुहाना, व्रत–उपवास कराया है।
द्वीप द्वीप में प्रायद्वीप यह, अज ने इसे बनाया है।।

फल फूलों की माँग बढ़ रही, कलश धूप सुलगाया है।
देशी घी का भोग लग रहा, नौ दिन दीप जलाया है।।
नौ दुर्गा माँ भवन विराजे, मोहित पाठ पढ़ाया है।
सप्तपदी की किरणें फैली, माँ का वैभव भाया है।।

पंडित राकेश मालवीय मुस्कान

नवसंवत्सर

नई भोर , नई किरण के साथ
आप सभी को नव वर्ष मुबारक हो
नवसंवत्सर का आगमन सभी के लिए
खुशहाल हो
नई खुशी , नई ऊर्जा का संचार हो
सबके हृदय में बस उम्मीदों का दिया हो
सबके जीवन में उल्लास ही उल्लास हो
कभी गमों का न हो गान
मुस्कुराना ही हो लबों की शान
सुंदर सा सुहावना सा बीते यह वर्ष
सभी के दिलों में हो हर्ष ही हर्ष
हर दिन उनका एक नया सवेरा लेकर आए
देखो तो३.!! खेत खलिहान भी झूम रहे
खुशियां आसमान को चूम रहे
नव संवत्सर का आगाज
सभी के लिए सुख , समृद्धि लेकर आए
उदासियां जीवन से मुक्त हो जाएं
न कभी भी हो किसी के जीवन में
गमों का कोई पहरा
सभी के सर पर हो बस खुशियों का सेहरा

अनीता अरोड़ा

नववर्ष

जो बीत गया है वह अब वर्ष ना आयेगा ।
जो मिला था पिछले वर्ष वह हर्ष न आयेगा ।।
तूने क्या पाया था तूने क्या गवाया था।
मिट्टी के खिलौने थे मिट्टी में मिलाया था।।
हर वर्ष जली होली उसको ही जलाया था।।
जो कृत्य किए तूने वह दृश्य न पायेगा।
जो मिला था पिछले वर्ष वह हर्ष न आयेगा।।
जीवन की नैया यह ढलती ही जाएगी ।
यह उम्र की गाड़ी है चलती ही जाएगी।।
हसरत चाहत दिल मे पलती ही जाएगी।।
जो याद आ रहा है वह दिल से नहीं जाएगा।
जो मिला था पिछले वर्ष वह हर्ष न आयेगा।।
जिनको हमने छोड़ा है या हमको जिसने छोड़ा ।
थोड़ी सी इनायत पर मुझसे मुखड़ा मोड़ा।।
हम क्यों बन जाए अब पथ में उनके रोड़ा ।।
जिसने हम को छोड़ा हमसा नहीं पाएगाा।
जो मिला था पिछले वर्ष वह हर्ष न आयेगा।।
जो बीत गया है वह अब वर्ष ना आयेगा ।
जो मिला था पिछले वर्ष वह हर्ष
न आयेगा।।

नीरज यादव(खिचड़ी सम्राट)

नव संवतसर

वैदिक शास्त्रों और पुराणों के अनुसार सृष्टि के निर्माता भगवान ब्रह्मा जी ने चौत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को इस संसार को रचा था, इसलिए इस पावन तिथि को श्नव संवत्सरश पर्व के रूप में भी मनाया जाता !सरल भाषा में हिंदू धर्म में वर्ष को संस्कृत में संवत्सर कहा जाता है मान्यता है कि ब्रह्माजी ने सृष्टि का आरम्भ चौत्र माह में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से ही किया था. इसलिए हर साल नव संवत का प्रारम्भ भी चौत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है. साल 2023 में हिंदू नववर्ष विक्रम संवत 2080, पिंगल संवत्सर का स्वागत बुधवार 22 मार्च 2023 के दिन किया जायेगा.

ओजस मित्तल

नव—वर्ष

चौत्र शुक्ल पक्ष का हुआ सवेरा,
भर खुशियों की झोली,
लेकर सुख समृद्धि का वरदान,
आया वर्ष प्रतिपदा का त्यौहार,
आया नववर्ष का त्यौहार ।

ले जगजननी का आशीर्वाद,
औढ़ संस्कारों संस्कृति की चुनरी,
संग पवित्रता की बयार,
आया नववर्ष का त्यौहार ।

प्रकृति मां बन मुस्कराती,
करती प्राणों का उत्थान,
कर सांसो का संचार ,
आया नववर्ष का त्यौहार ।

निकली चहुं ओर निर्मल धूप,
आशा की किरणों के संग ,
लेकर शुभकामनाओं का संदेश,
आया नववर्ष का त्योहार ।

डॉ मानवेन्द्र सिंह 'मनि'

नवसंवत्सर

शुक्ल चौत्र प्रतिपदा आ गई
स्वागत करलो शोभक्रुत् का
शुभ ही शुभ था शुभक्रुत् में
अब पूरे जग में शोभा ही होगी

कल की बोरें आम बन गई
उपवन की कलियाँ खिल गई
रंग बिरंगी गालियाँ बन गई
घर घर में खुशियाँ छा गई

सुन कोयल का गीत मधुरमधुर
भौरों की बड़ती गूंज मधुर
इस प्रकृति के रूप मधुर
हम सब गायें गीत मधुर

नव उमंग नव रंग लिये
नव आशा को संग लिये
जीवन में अब बड़े चले हम
प्रेम समुद्र की तरंग लिये

गुड़ीपड़वा या कहो बैसाखी
चेत चडी या कहो उगादि
धर्म जाति को जाओ भूल
हर दिल में खिलें प्रेम फूल

डॉ सत्यवानी मुक्कू

नवसंवत्सर की फुसफुसाहट

अजन्मे नवसंवत्सर की फुसफुसाहट,
मेरा मन टटोल रहा है,
सुनो नवसंवत्सर कुछ बोल रहा है।

बीते साल की फुसफुसाहट में,
नवसंवत्सर मृदुल अधर खोल रहा है,
धीमी, सौम्य स्वरों की गुंजन लिए,
अजन्मा नवसंवत्सर कुछ बोल रहा है,

तैयार हो ना,मेरे स्वागत के लिए,
चुनौती,अवसर और आफत के लिए,
आ रहा हूं मैं असंख्य संभावनाएं लेकर,
तैयार रहना आवभगत के लिए,

खुशियां बहुत है मेरी झोली में,
तकलीफें,मौके और संघर्ष भी,
कुछ तजुर्बे भी भेंट स्वरूप दूंगा,
संग आएंगे अपकर्ष और उत्कर्ष भी,

चोटिल ठोकरों से ना घबराना तुम,
हौसला बांधकर कदम बढ़ाना तुम,
गर्म तपिश के बाद ठंडे झोंके भी मिलेंगे,
बस धैर्य का दामन ना छोड़ जाना तुम,

नव कल्पनाएं मेरा मन टटोल रहा है,
सुनो नवसंवत्सर कुछ बोल रहा है।

नंदिता माजी शर्मा

सुरभित मधुरम

हर्षित अंतस हो रहा
बिखर रहा उल्हास
खुशियों का संचार नवसंवत्सर
धरती और आकाश।।

सुरभित मधुरम काव्य रस
बरसें नित्य समक्ष
पावन गाथा सजाती
धरती नभ के पक्ष।।

स्नेहमयी मां रूप तुम्हारा
वर्णित माह महान
नव रूप धर अति पावनी
सृष्टि की पहचान।।

अविरल धारा सौम्यता
अतिशय पावन जान
साजें शुभ साहित्य को
'पुष्प' की पहचान।।

पुष्पा त्रिपाठी 'पुष्प'

नवसंवत्सर मनाएंगे

हम भारत के हिंदू जन
हिंदू त्यौहार मनाएंगे
छोड़ पाश्चात्य सभ्यता को
नवसंवत्सर हम मनाएंगे
नहीं कहेंगे हैप्पी न्यू ईयर
ना जनवरी में नया साल मनाएंगे
नवसंवत्सर को शुभकामनाएं दें
हिंदुत्व हम फैलाएंगे
सब त्यौहार यहीं से शुरू
सब मंगल गान हैं यहीं से शुरू
तो क्यों ना गीत हम गाएंगे
हम भारत के हिंदू जन
नवंत्सर के गीत गाएंगे।

उर्मिल शर्मा

नववर्ष की महिमा अपरंपार

आओ चौत्र प्रतिपदा में आया नव वर्ष को मनायें।
इसका अपना ही महत्व समझें और समझाएं।।

नववर्ष आगमन की प्रकृति भी खुशी मनायें।
हर तरफ कुदरत सुंदर पुष्पों से स्वतः सज जायें।।

मनमोहक हरी–भरी धरा भी श्रृंगार से सज जायें ।
नवरात्रि में आदिशक्ति का रुप हर जन जान पायें।।

भगवान राम जन्म नववर्ष की प्रतिपदा में ही मनायें।
संस्कृति का नववर्ष हरेक के मन को खुश कर जायें।।

पलाश के फूल लाल रंग बिखेरे नववर्ष का जश्न मनायें।
मंद मंद हवा सुंगध बिखेरे कर चलती ही जायें।।

प्रकृत्ति भी नवयौवना बन नववर्ष में सबको हर्षायें।
कोयल की मधुर कूक भी नववर्ष में सबको नचायें।।

सृष्टि का निर्माण नववर्ष प्रतिपदा में ही कर पायें।
बैशाखी महावीर हनुमान जयंती संवत्सर में आये।।

नव संवत्सर की महिमा निराली सभी खुश हो जायें
खुशी खुशी हो इसका अभिनंदन सबके मन हर्षायें।।

हीरा सिंह कौशल

हिन्दू नव वर्ष आया है

एक दूसरे को दो बधाई हिन्दू नव वर्ष आया है,
अपनी संस्कृति पर गर्व करने का पल आया है।
चौत्र शुक्ल प्रतिपदा से दो हजार अस्सी आया है,
वासंती नवरात्रि भी खुशियों का सौगात लाया है।

ब्रम्हा जी ने इसी दिन सृष्टि का निर्माण किया था,
विक्रमादित्य ने विक्रम संवत शुरूआत किया था।
भगवान राम का इसी दिन राज्याभिषेक हुआ था,
युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।

नव वर्ष के दिन अपने–अपने घरों में धर्मध्वज लगाएं,
शाम होते ही घरों में दीप जला कर उत्सव मनाएं।
नव संवत्सर शुरू होने का कारण बच्चों को बताएं,
विमुख होते युवा पीढ़ी को संस्कृति से परिचय कराएं।

नव वर्ष की बेला में हम सभी को लेना होगा संकल्प,
नहीं है विश्व में भारतीय संस्कृति का कोई विकल्प।
भेदभाव भूल कर खुशियाँ मनाने का है यह प्रकल्प,
अपनी संस्कृति की रक्षा का आज फिर लो संकल्प।

डॉ पूनम जायसवाल,

नवसंवत्सर की बेला

नवसंवत्सर की बेला में आओ हम सब खुशियाँ मनाएं,
नववर्ष के स्वागत में सभी अपने घरों में धर्मध्वज लगाएं।
रंगोली बना कर घर के आँगन और द्वार को खूब सजाएं,
संस्कृति के अनुरूप हम सब मिल कर मंगल गीत गाएं।

चौत्र प्रतिपदा संवत दो हजार अस्सी लाएं खुशियाँ अपार,
नववर्ष की पहली किरण से नव चेतना का होगा संचार।
हर तरफ होगी खुशियाँ शुरू हो रहा नवरात्रि का त्योहार,
अंग्रेजियत का त्याग अपना लो अपनी संस्कृति का विचार।

भटक रहे अपनी संस्कृति से हम सब भूल रहे नवसंवत्सर,
पाश्चात्य संस्कृति को अपना कर अखिर जाएंगे हम किधर।
अपनी विरासत को पहचानो जरा कोई नहीं हमसे बेहतर,
युवा पीढ़ी को बताना होगा भारतीय संस्कृति है सुन्दर।

नवसंवत्सर पर दीप जलाओ सब मिल कर नाचो गाओ,
सुबह घर मंदिर में पूजा कर शाम को महाआरती में जाओ।
नववर्ष की बधाई एक दूसरे को दे जम कर खुशियाँ मनाओ,
चौत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा नववर्ष है यह बात सबको बताओ।

सतीश जायसवाल

आई खुशियों की सौगात

विकम संवत 2080 आया ।
संग लाया खुशियों का पैगाम।
नल नाम पाया हमारे संवत ने।
हर तरफ खुशहाली हो।
आगाज उन्नति का चहुंओर।
वैमनस्य भूल जाएं।
रोशन सकल जग हो जाए।
सौहार्द मय हो जगत हमारा।
चारों ओर हो अमन शांति।
ब्रह्मा जी ने रचना की संसार की।
आओ प्रेम मय हो उनका मान बढाएं।
परिवर्तन हो हमारे दुष्ट विचारों का।
सौगात लाया प्रेम विचारों की।
होगा अधिपति बुध ग्रह,शुक्र होगा मंत्री।
छा जाएगी चारों ओर खुशहाली।
अनमोल, अनुपम तोहफे लाया जिंदगी में।
मौलिक अप्रकाशित स्वरचित

मंजु रत्न भार्गव

शुभकामनाएं

शुभकामनाएं शुभमंगल हुई सभी दिशाएं मन मंदिर दीप जलाओ जगत जननी शुभागमन

भारतीय नवसंवत्सर 2080

दिव्य सनातन सभ्यता संस्कृति ऋषि परम्परा

वेद ,उपनिषद धार्मिक ग्रन्थों में अर्थ निहित शुभ मंगल बेला सुख – समृद्धि का रेला अरुणोदय से प्रारंभ शुभारंभ स्वर्णिम आभा.. दिव्य तेज पदार्पण शुभागमन आदिशक्ति आशीषों का दे रही वरदान हाथ जोड़ करो नमन .. नतमस्तक नत शित बारम्बार दिव्य अनुभूतियों भव्यता का दिव्य दर्शन कर बंधन कर धरा धर मस्तक स्वयं अवतरित मां जगदम्बा संरक्षण को धरा के स्वयं मां जगदम्बा नवदुर्गा अवतरित

दिव्यता संग दिव्य अनुभूतियों से मन हर्षित कलश भर जल करो जगदम्बा चरण वंदन थाल सजा दिव्य दीप कर प्रकाशित

पहना गुलाब पुष्प गल माला

कर श्रृंगार माथे तिलक ज्यों चंदा नील गगन वंदन करो मां की महिमा अपरम्पार गुणगान मां जगदम्बा का..देता आलौकिक सुख आभार नव संवत्सर में मां जगदम्बा स्वयं देने आती आशीषों की भरमार ..माता की ममता से सुखी बसे सब संसार सुख समृद्धि की नित नयी उंचाईयों

नवसंवत्सर में दिलों में भरपूर रहे

निस्वार्थ प्रेम अपनत्व का संसार ..

ऋतु असूजा

नव संवत्सर मे आओ,

नव उल्लास जगाये हम,
नई उमंगे भरे सभी में,
नव उत्सव मनाये हम।

जीवन इसमें रीते बीते,
कोई साहस ले दृढ़ता ले, ,
जीवन में धैर्य समाये,
कोई त्वरित सहजता ले।

जो बीत गया सो बीत गया,
जो आने वाला संजोये हम,
प्यार प्रीत का जीवन भाये,
इसे ही सदा अब बोये हम।

न हो कहीं बैर भाव वह,
न ही उपद्रव पनपे कहीं,
न जीवन राग द्वेष में हो,
न बेबस कोई खपे कहीं।

नव संवत्सर में यह जीवन,
आनंद में रह मुस्काये,
देश भी अपना अपनों संग,
फूलों सा खिलता जाये।

संतोष श्रीवास्तव 'सम'

आया नव संवत्सर

नव संवत्सर के आगमन से
धरती में आई फिर रौनक
नए कपोल के साथ तरु भी
खुशी मनाये मनमोहक।
आज पवन ने बदली है
देखो अपनी चाल है
फूल उड़ाये अपनी खुसबू
पपीहा सुनाए गान है ।
नव संवत्सर लेकर आया
खेतों में धन्य धान है
खलियानों में चमक रहे है
सुनहरे गेंहूँ के बाल है।
पीली सुनहरी चादर ओढ़े
नव संवत्सर ने किया श्रृंगार
हलधर के चेहरों में आई
फिर प्यारी सी बड़ी मुस्कान ।
स्वागत करता आसमान है
कोयल सुनाती तान है
धरा उतारती फसली का गहना
फिर नया करने श्रृंगार है।

श्याम कुमार कोलारे

नई उमंग नए जोश के संग

आओ बिखेरे मिलकर खुशियों के रंग
एक सफर समझाईशो का।
सिखाता न हाथ छोड़ो ख्वाहिशों का।।
और न है,ये वक्त दूसरो से फरमाइशों का।
ये सफर तो हैं, खुद से अजमाइशो का।।
न अपने आंसुओ को बेशुमार बहने दो।
है,दिल में कोई गम तो दिल दफन रहने दो।।
कोई बुरा कहे तुम्हे उसे उसकी हवा में बहने दो।
अपनी खुशियों को अपने पास रहने दो।।
अपनी मुस्कराटो खिलखिलाकर हसने दो।
कभी खुद को खुद से बाते करने दो।
अपने हुनर को खुले आसमां में उड़ने दो।।
अपनी पहचान को एक नया नाम मिलने दो।
दोस्तों की महफिल एक बार फिर जमने दो।।
जिन्हे तुम पसंद नहीं उन्हे जरा आगे बढ़ने दो।
जो आता है,करीब उसे जरा दिल में बसने दो।।
ना रोको कभी अपने बढ़ते कदमों को।
बढ़ती हुई उम्र को जरा संवरने तो दो।।
सूरज ढलता है,तो ढलने दो।
उसकी लालिमा को बिखरने दो।।
शीतल चांद को जरा खिलने दो।
तारों की झिलमिलाहट से बाते करने दो।।
जो करते है,नफरत बेपनाह करने दो।
अपनी चाहतों के रंग खुलकर बिखरने दो।।

शिल्पी जैन

एक नया मोड़

नव संवत्सर की शोभा देखो इंद्रधनुष से सजा अंबर देखो
बागों में खिल गई कालिया, प्राकृति ने बिखेरी छटा निराली देखो..।
तुम भी अपने गम को भुला के जीवन को एक नया मोड़ दो..!

अब गम के गीत गाना छोड़ दो
जिंदगी को फिर से एक नया मोड़ दो..!

भुल जाओ सारे गम,दर्द को अब करो कम,
क्या हुआ अगर रह गए,सपने अधूरे...!

आज तक इस धरा पर हुए किसके सपने पुरे..!
नई उमीद के साथ फिर
आज नया रिश्ता जोर दो..!

जिंदगी को फिर से नया मोड़ दो...!
अतीत को भूल कर फिर से सपने सवार लो,पथझरो को थाम लो..!
और गम से यूं ना हारो...
बाधाएं जो पथ रोके हुए हैं
उनको झटक कर तोर दो जिंदगी को फिर से नया मोड़ दो ..।
बीती बातें भुला कर देखो ये नव उत्सव मना कर देखो
जिंदगी को एक नया मोड़ दो..!

रूपा कुमारी कर्ण

नूतन वत्सर पदार्पण

वृक्ष लताएं पल्लवित,
पुष्प करें मुस्कान।
नूतन वत्सर पदार्पण,
करा रहे पहचान।।

सौर चंद्र नक्षत्र हैं,
सावन अरु अधिमास।
पांच अलग प्रकार है,
संवत्सर के खास।

पुष्प धूप नैवेद्य अरु,
दीप जले चहुं ओर।
सुमधुर सुवास शतपत्र,
बधे नेह की डोर।

ब्राह्मण कन्या गाय अरु,
कौआ कुत्ता खास।
इन पांचों को खिला कर,
शुरू करें नव मास।।

बैसाखी गुड़ी पड़वा,
उगादी चेति चन्द।
नव वर्ष के अवसर पर
उठाइए मकरंद।

दुर्गेश्वर राय

शुभ पिंगल

अपना घर आंगन सजने लगा
उमंग भरी मौसम बनने लगा
घर घर में खुशहाली छाने लगा
द्वार पर तोरणद्वार सजने लगा।
नवसंवत्सर की खुशहाली छाने लगा
नववर्ष की नवचेतना में भक्ति बना माहौल
घर घर पूजा पाठ हो रही उपवास
वसंती मौसम उमंग उर जगाती ।
धरा पर उमंग गीत हर्षित नवचेतना में
चौत्र मास में शुक्ल पक्ष नवसंवत्सर की
2080 नवसंवत्सर पिंगल आया
हिन्दू धर्म में पंचांग ने मन गुदगुदाया ।
हर्षित आम पल्लव कलश स्थान पाया
नव नव बालियां झूमे किसान हर्षाया
नव प्रसाद की नव फल अर्पण
फल फूल से भरा है सारा चमन।
नवरात्रि की धूम इसी दिन शुरूआत
मां के नवरूपो में होती पूजा पाठ
रामनवमी में रामचंद्र अवतार
घर घर बजती मृदंग डोल नगार।
नवसंवत्सर नयी व्यंजन की उमंग
मान्यता है इसी दिन सृष्टि निर्माण
इतना वर्ष बीते आगे क्रम बारंबार
पिंगल नववर्ष की शुभकामनाएं संसार।

सुनील कुमार रोहतास

नववर्ष

खिली दिखें खुशियाँ चहुँदिशि
फैली है धरती पर हरियाली।
माता के संग संग आये चौत्र में
नववर्ष लिए मधुरस की प्याली।

हर्षित किसान पकगयी फसल
लगती सारी खेती अब प्यारी।
कोयल कूके मीठे सुर में नित
झुक गयी डाल फूलों से न्यारी।
खिली दिखें खुशियाँ चहुँदिशि
फैली है धरती पर हरियाली।

मनहर लगे प्रकृति की शोभा
सर सर बहती पवन सुहानी।
यह धरा लगे रति के समान
पहने बैठी वह चूनर है धानी।
नववर्ष हमारा सबसे ही न्यारा
लेकर चलता संग खुशहाली।

नव संवत्सर के साथ चली हैं
मैयाजी सबको दर्शन है देने।
नव वर्ष साथ नव रात्र शुरू है
दुख दर्द सभी के ही हर लेने।
पावन काल कहें सब इसको
नारायण की यह रूपों वाली ।

डॉ सरला सिंह 'स्निग्धा'

पतझड़ बीता नववर्ष आया

आए जो वसंत में पतझड़
होते नही बेहाल हैं ।
इधर उधर देखी तो
सबका यही हाल है।
वे मौसम मे पतझड़
आए आती बड़ी मलाल है ।
ईश्वर ने भी देख रखे थे
मेरा ही घर बार है ।
सोचा था कलियां निकलेगी कोमल सी इस डाली में।
लाली किरण पड़ते ही महक उठेगी फुलवाड़ी में ।
समय की पहिया उल्टी घूमी
आ गई अगुआई में।
खिलना था नभ मंडल में
चली गई मैं खाई में ।
किस्मत की डोरी छूट गई
हैसला ही टूट गई ।
पतझड़ बीता नववर्ष आया,
उम्मीद की कलियां निकल पड़ी।
नवसूरज की लाली किरणों से,
खिल गगन में महक उठी।
स्वगत करें सहर्ष मिलकर,
चौत मास में हिन्दू नववर्ष आई है।
मां दुर्गा और प्रभु राम,
जीवन में खुशियां देने आए हैं।

सरिता सिंह

नव संवत्सर

मान करें , सम्मान करें हम
नया साल स्वीकार करें हम
काफी खोया है , हमने अब
सुखद साल हो ,आह्वान करें हम

खेतों में सरसों लहराये
कोयल मीठी तान सुनाये
नव संवत्सर पर बिंदेश्वर
आओ, हम सब खुशी मनायें

सदैव। आलोकित करता रहें
उज्जवल। प्रकाश यह नव वर्ष
अन्याय का काम करें विरोध
लेकर दृढ़ – संकल्प सहर्ष

प्रसार करें हम सभी
स्नेह बंधुत्व। की भावना
करे तिलांजलि ईर्ष्या –द्वेष की
यही है , हमारी शुभकामना

बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता

नवसंवत्सर

नव उल्लास उम्मीदों संग
नवसंवत्सर का आगाज करें।
हो उन्नति पथ पर राष्ट्र सदा
मिलकर ऐसा काज करें।...
मिटा भेद जाति–धर्म का
सभ्य समाज की नींव गढ़ें।
सर्वभावों को दे सदा सम्मान
किसी एक पर नहीं दोष मढ़ें।
हो कोई मत ना अलग–थलग
तो फिर क्यों आपस में अड़ें।
है अपना सबका लक्ष्य एक
रहे दृढ़ प्रस्फुटित राष्ट्र जड़ें।
मिल स्वदेश हित में नेक करें।
नव उल्लास उम्मीदों संग.....।
सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग
बनी हर युग की एक कहानी।
वेद पुराणों में महिमामंडित
सुनी नित्य अपनों की जुबानी।
जन्में सत्यवादी,रघुकुल शिरोमणि
रास रसिया व कर्ण शौर्य महादानी।
होते गर्वित सुन उनकी गौरवगाथा
रहे जनकल्याण राष्ट्रोन्माद शानी।
हम भी सर्वधर्म सम्मान करें।
नव उल्लास उम्मीदों संग.....।

महेन्द्र सिंह कटारिया

नव उमंग

नव जीवन मार्ग पर चलना होगा
नव वर्ष पर शुभ फल प्राप्त करना होगा

कर्म दिशाओं को चुनकर कुछ
नव संकल्प शुभभाव रोज करना होगा

नए वर्ष ज्ञान ज्योत अखंड जलाते
श्रध्दादीप जलाकर कदम बढ़ाना होगा

जीवन की खुशियों में अनुकूल कुछ
प्रतिकुल के हिसाब किताब करना होगा

आशाओं के आंगन द्वार पर खड़े
महेमान आंगतुकों का स्वागत करना होगा

नई राह नई उमंग नया सवेरा
अपने किरदार में रहकर कर्म करना होगा

आओ मिलकर त्यौहार मनाए
घर घर प्रगति का पथ दिखाना होगा

कुछ खोज कर भेंट लेकर अच्छे
सही विचारों का शिक्षा दान हमें देना होगा

प्रोध्डा दक्षा एच निमावत

नव संवत्सर

स्वागत करती लेखनी, रच दो दोहा एक।
कम शब्दों में बोल दो, मन के भाव अनेक।।

संवत दो हजार अस्सी, हुआ नव वर्ष आरंभ।
चौत्र शुक्ल की प्रतिपदा, हो
मां का आवाहन।।

प्रथम पूज्य शैलपुत्री,है
वैशाली का पर्व।
. आओ मनाएं नवरात्रि, सब
. हर्षोल्लास के संग।।

रिद्धि,सिद्धि,बुद्धि,उपहारदो,
देओ अभय वरदान।
स्वस्थ सुरक्षित सभी रहो,
करो करोना नाश।।

मान दो सम्मान दो मां,
भर दो हृदय में ज्ञान।
सर्व संकट हारणी मां,
दे दो विद्या का भान।।

प्रेषित करते शुभकामना,
तुमको बारम्बार।
सुख समृद्धि धनधान्य का,
करें हृदय से आभार।।

सुनीता बंसल

ISBN- 978-93-91442-08-8 RNI No. : RAJHIN27861/2021

काव्य संगम

Rs. 289/-

ISBN
978-93-91442-08-8